दिसम्बर 2022

"वसुधैव कुटुम्बकम्"
ONE EARTH · ONE FAMILY · ONE FUTURE

आज़ादी का अमृत महोत्सव

विकसित भारत देश अग्रसर

अमृत काल 2022-47

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 **प्रधानमंत्री का सन्देश** 1

02 **प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख** 15

2.1 **अमृत काल**
'विकसित भारत' के पथ पर देश अग्रसर 16

2.1.1 **प्रधानमंत्री का 'अमृत काल' का विज़न**
विश्वगुरु के रूप में भारत के फिर से उभरने की दिशा में एक बड़ी छलाँग : एम. वेंकैया नायडू का लेख 20

2.1.2 **आत्मनिर्भर भारत...आत्मनिर्भर कृषि...प्राकृतिक कृषि**
आचार्य देवव्रत का लेख 22

2.1.3 **भारतीय अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाने की राह**
डॉ. अरविन्द पनगढ़िया का लेख 24

2.2 **काशी तमिल संगमम्** 26

2.2.1 **काशी-तमिल संगमम् : उत्तर और दक्षिण का शानदार सांस्कृतिक संगम**
डॉ. एल. मुरुगन का लेख 28

2.3 **अटल बिहारी वाजपेयी : एक असाधारण व्यक्तित्व** 32

2.4 **भारतीय पारम्परिक चिकित्सा : साक्ष्य की कसौटी पर खरी उतरती** 34

2.4.1 **सिखाने और प्रेरित करने वाली - योगऐनेटमी**
डॉ. राजेन्द्र अच्युत बडवे का लेख 36

2.4.2 **भारतीय परम्पराओं से आन्तरिक शक्ति का उदय**
डॉ. गौतम शर्मा का लेख 38

2.4.3 **9वीं विश्व आयुर्वेद कांग्रेस** 40

2.5 **नमामि गंगे : गंगा का पुनर्जीवन** 42

2.6 **सोमगो पोखरी संरक्षण समिति** 44

2.7 **सूचना और प्रसारण मंत्रालय : स्वच्छ भारत के माध्यम से ज़मीनी बदलाव** 46

2.7.1 **स्वच्छ भारत की सच्ची भावना का उदाहरण बना सूचना और प्रसारण मंत्रालय :** गौरव द्विवेदी का लेख 50

2.8 **भारत की अमूल्य धरोहर**
'नए भारत' की आधार शिला 52

2.9 **वीर बाल दिवस : अदम्य शौर्य की कहानी** 62

2.9.1 **भारत के इतिहास का पुनर्स्थापन : वीर बाल दिवस पर सिख समुदाय के प्रतिनिधियों का कथन** 64

03 **प्रतिक्रियाएँ** 67

प्रधानमंत्री का सन्देश

मेरे प्यारे देशवासियो ! नमस्कार

आज हम 'मन की बात' के छियानवे (96) एपिसोड में साथ जुड़ रहे हैं। 'मन की बात' का अगला एपिसोड वर्ष 2023 का पहला एपिसोड होगा। आप लोगों ने जो सन्देश भेजे, उनमें जाते हुए 2022 के बारे में बात करने को भी बड़े आग्रह से कहा है। अतीत का अवलोकन तो हमेशा हमें वर्तमान और भविष्य की तैयारियों की प्रेरणा देता है। 2022 में देश के लोगों का सामर्थ्य, उनका सहयोग, उनका संकल्प, उनकी सफलता का विस्तार इतना ज़्यादा रहा कि 'मन की बात' में सभी को समेटना मुश्किल होगा। 2022 वाकई कई मायनों में बहुत ही प्रेरक रहा, अद्भुत रहा। इस साल भारत ने अपनी आज़ादी के 75 वर्ष पूरे किए और इसी वर्ष 'अमृत काल' का प्रारम्भ हुआ। इस साल देश ने नई रफ़्तार पकड़ी, सभी देशवासियों ने एक से बढ़कर एक काम किया। **2022 की विभिन्न सफलताओं ने आज पूरे विश्व में भारत के लिए एक विशेष स्थान बनाया है। 2022 यानी भारत द्वारा दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का मुक़ाम हासिल करना, 2022 यानी भारत द्वारा 220 करोड़ वैक्सीन का अविश्वसनीय आँकड़ा पार करने का रिकॉर्ड, 2022 यानी भारत द्वारा निर्यात का 400 बिलियन डॉलर**

का जादुई आँकड़ा पार कर जाना, 2022 यानी देश के जन-जन द्वारा 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्प को अपनाना, जी कर दिखाना, 2022 यानी भारत के पहले स्वदेशी एयरक्राफ्ट कॅरीयर INS Vikrant का स्वागत, 2022 यानी स्पेस, ड्रोन और डिफेन्स सेक्टर में भारत का परचम, 2022 यानी हर क्षेत्र में भारत का दमखम। खेल के मैदान में भी, चाहे कॉमनवेल्थ गेम्स हों, या हमारी महिला हॉकी टीम की जीत, हमारे युवाओं ने जबरदस्त सामर्थ्य दिखाया।

साथियो, इन सबके साथ ही साल 2022 एक और कारण से हमेशा याद किया जाएगा। ये है, 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की भावना का विस्तार। देश के लोगों ने एकता और एकजुटता को सैलेब्रेट करने के लिए भी कई अद्भुत आयोजन किए। गुजरात के माधवपुर का मेला हो, जहाँ रुक्मिणी विवाह और भगवान कृष्ण के पूर्वोत्तर से सम्बन्धों को सैलिब्रेट किया जाता है या फिर काशी-तमिल संगमम् हो, इन पर्वों में भी एकता के कई रंग दिखे। 2022 में देशवासियों ने एक और अमर इतिहास लिखा है। अगस्त के महीने में चला 'हर घर तिरंगा' अभियान भला कौन भूल सकता है। वो पल थे, हर देशवासी के रोंगटे खड़े हो जाते थे। आज़ादी के 75 वर्ष के इस अभियान में पूरा देश तिरंगामय हो गया। 6 करोड़ से ज़्यादा लोगों ने तो तिरंगे के साथ सेल्फ़ी भी भेजीं। आज़ादी

का ये अमृत महोत्सव अभी अगले साल भी ऐसे ही चलेगा, 'अमृत काल' की नींव को और मज़बूत करेगा।

साथियो, इस साल भारत को G20 समूह की अध्यक्षता की ज़िम्मेदारी भी मिली है। मैंने पिछली बार इस पर विस्तार से चर्चा भी की थी। साल 2023 में हमें G20 के उत्साह को नई ऊँचाई पर लेकर जाना है, इस आयोजन को एक जन-आन्दोलन बनाना है।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज दुनियाभर में धूम-धाम से क्रिसमस का त्योहार भी मनाया जा रहा है। ये जीसस क्राइस्ट के जीवन, उनकी शिक्षाओं को याद करने का दिन है। मैं आप सभी को क्रिसमस की ढेर सारी शुभकामनाएँ देता हूँ।

साथियो, आज हम सभी के श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयीजी का जन्मदिन भी है। वे एक महान राजनेता थे, जिन्होंने देश को असाधारण नेतृत्व दिया। हर भारतवासी के हृदय में उनके लिए एक खास स्थान है। मुझे कोलकाता से आस्थाजी का एक पत्र मिला है। इस पत्र में उन्होंने हाल की अपनी दिल्ली यात्रा का ज़िक्र किया है। वे लिखती हैं कि इस दौरान उन्होंने पीएम म्यूज़ियम देखने के लिए समय निकाला। इस म्यूज़ियम में उन्हें अटलजी की गैलरी खूब पसन्द आई। अटलजी के साथ वहाँ खींची गई तस्वीर तो उनके लिए यादगार बन गई है। अटलजी की गैलरी में हम देश के लिए उनके बहुमूल्य योगदान की झलक देख सकते हैं। इन्फ्रास्ट्रक्चर हो, शिक्षा या फिर विदेश नीति, उन्होंने भारत को हर क्षेत्र में नई ऊँचाइयों पर ले जाने का काम किया। मैं एक बार फिर अटलजी को हृदय से नमन करता हूँ।

साथियो, कल 26 दिसम्बर को 'वीर बाल दिवस' है और मुझे इस अवसर पर दिल्ली में साहिबज़ादा जोरावर सिंहजी और साहिबज़ादा फ़तेह सिंहजी की शहादत को समर्पित एक कार्यक्रम में शामिल होने का सौभाग्य मिलेगा। देश, साहिबज़ादे और माता गुजरी के बलिदान को हमेशा याद रखेगा।

आधुनिक विज्ञान की कसौटियों पर खरे उतर रहे हैं

योग और आयुर्वेद

मेरे प्यारे देशवासियो, हमारे यहाँ कहा जाता है –

सत्यम किम प्रमाणम, प्रत्यक्षम किम प्रमाणम।

यानी सत्य को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती, जो प्रत्यक्ष है, उसे भी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती, लेकिन बात जब आधुनिक मेडिकल साइंस की हो, तो उसमें सबसे महत्त्वपूर्ण होता है – प्रमाण– एविडेन्स। सदियों से भारतीय जीवन का हिस्सा रहे योग और आयुर्वेद जैसे हमारे शास्त्रों के सामने एविडेन्स बेस रिसर्च की कमी, हमेशा-हमेशा एक चुनौती रही है– परिणाम दिखते हैं, लेकिन प्रमाण नहीं होते हैं, लेकिन मुझे ख़ुशी है कि एविडेन्स बेस मेडिसन के युग में अब योग और आयुर्वेद आधुनिक युग की जाँच और कसौटियों पर भी खरे उतर रहे हैं। आप सभी ने मुम्बई के टाटा मेमोरियल सेन्टर के बारे में ज़रूर सुना होगा। इस संस्थान ने रिसर्च, इनोवेशन और कैंसर केयर में बहुत नाम कमाया है। **इस सेन्टर द्वारा की गई एक इन्टेंसिव रिसर्च में सामने आया है कि ब्रेस्ट कैंसर के मरीज़ों के लिए योग बहुत ज़्यादा असरकारी है। टाटा मेमोरियल सेन्टर ने अपनी रिसर्च के नतीजों को अमेरिका में हुई बहुत ही प्रतिष्ठित ब्रेस्ट कैंसर कॉन्फ्रेंस में प्रस्तुत किया है। इन नतीजों ने दुनिया के बड़े-बड़े एक्सपर्ट का ध्यान अपनी तरफ खींचा है, क्योंकि टाटा मेमोरियल सेन्टर ने एविडेन्स के साथ बताया है कि कैसे मरीज़ों को योग से लाभ हुआ है। इस सेन्टर की रिसर्च के मुताबिक योग के नियमित अभ्यास से ब्रेस्ट कैंसर के मरीज़ों की बीमारी के फिर से उभरने और मृत्यु के खतरे में 15 प्रतिशत तक की कमी आई है। भारतीय पारम्परिक चिकित्सा में यह पहला उदाहरण है, जिसे पश्चिमी तौर-तरीकों वाले कड़े मानकों पर परखा गया है, साथ ही यह पहली स्टडी है, जिसमें ब्रेस्ट कैंसर से प्रभावित महिलाओं में योग से क्वालिटी ऑफ़ लाइफ़ के बेहतर होने का पता चला है। इसके लॉन्ग टर्म बेनिफिट भी सामने आए हैं। टाटा मेमोरियल सेन्टर ने अपनी स्टडी के नतीजों को पेरिस में हुए यूरोपियन सोसाइटी ऑफ़ मेडिकल ऑन्कोलॉजी में उस सम्मेलन में प्रस्तुत किया है।**

साथियो, आज के युग में भारतीय चिकित्सा पद्धति जितनी ज़्यादा एविडेन्स बेस्ड होंगी, उतनी ही पूरे विश्व में उनकी स्वीकार्यता बढ़ेगी। इसी सोच के साथ दिल्ली के एम्स में भी एक प्रयास किया जा रहा है। यहाँ हमारी पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियों को वेलिडेंट करने लिए छह साल पहले सेन्टर फॉर इंटरग्रेटिव मेडिसिन और रिसर्च की स्थापना की गई। इसमें लेटेस्ट मॉडर्न टेक्निक और रिसर्च मैथड का उपयोग किया जाता है। यह सेन्टर पहले ही प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय जर्नल में 20 पेपर प्रकाशित कर चुका है। अमरीकन कॉलेज ऑफ़ कारडियोलॉजी के जर्नल में प्रकाशित एक पेपर में सिन्कपी से पीड़ित मरीज़ों को योग से होने वाले लाभ के बारे में बताया गया है। इसी प्रकार न्यूरोलॉजी जर्नल के पेपर में माइग्रेन में योग के फ़ायदों के बारे में बताया गया है। इनके अलावा कई और बीमारियों में भी योग के बेनिफिट को लेकर स्टडी की जा रही है, जैसे हार्ट डिजिज़, डिप्रेशन, स्लिप डिसआर्डर और प्रेगनेंसी के दौरान महिलाओं को होने वाली समस्याएँ।

साथियो, कुछ दिन पहले ही मैं वर्ल्ड आर्युवेदा कॉन्फ्रेन्स के लिए गोवा में था। इसमें 40 से ज़्यादा देशों के डेलिगेट्स शामिल हुए और यहाँ 550 से अधिक साइंटिफिक पेपर प्रेजेंट किए गए। भारत सहित दुनियाभर की करीब 215 कम्पनियों ने यहाँ एक्ज़िबिशन में अपने प्रोडेक्ट को डिसप्ले किया। चार दिनों तक चले इस एक्सपो में एक लाख से भी अधिक लोगों ने आयुर्वेद से जुड़े अपने एक्सपीरियन्स को एन्जॉय किया।

आयुर्वेद कांग्रेस में भी मैंने दुनिया भर से जुटे आयुर्वेद एक्सपर्ट के सामने एविडेन्स बेस रिसर्च का आग्रह दोहराया। **जिस तरह कोरोना वैश्विक महामारी के इस समय में योग और आयुर्वेद की शक्ति को हम सभी देख रहे हैं, उसमें इनसे जुड़ी एविडेन्स-बेस्ड रिसर्च बहुत ही महत्त्वपूर्ण साबित होगी। मेरा आपसे भी आग्रह है कि योग, आयुर्वेद और हमारी पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियों से जुड़े हुए ऐसे प्रयासों के बारे में अगर आपके पास कोई जानकारी हो तो उन्हें सोशल मीडिया पर ज़रूर शेयर करें।**

नि-क्षय मित्र बनकर दें एक उदाहरण
टीबी मरीज़ों के जीवन से
करें टीबी का निवारण

मेरे प्यारे देशवासियो, बीते कुछ वर्षों में हमने स्वास्थ्य-क्षेत्र से जुड़ी कई बड़ी चुनौतियों पर विजय पाई है। इसका पूरा श्रेय हमारे मेडिकल एक्सपर्ट, साइंटिस्ट और देशवासियों की इच्छाशक्ति को जाता है। हमने भारत से स्मॉल पोक्स, पोलियो और 'गिन्नी वर्म' जैसी बीमारियों को समाप्त करके दिखाया है।

आज 'मन की बात' के श्रोताओं को मैं एक और चुनौती के बारे में बताना चाहता हूँ, जो अब समाप्त होने की कगार पर है। ये चुनौती, ये बीमारी है– 'कालाजार'। इस बीमारी का परजीवी सेन्ड फ्लाई यानी बालू मक्खी के काटने से फैलता है। जब किसी को 'कालाजार' होता है तो उसे महीनों तक बुखार रहता है, खून की कमी हो जाती है, शरीर कमज़ोर पड़ जाता है और वजन भी घट जाता है। यह बीमारी बच्चों से लेकर बड़ों तक, किसी को भी हो सकती है, लेकिन सबके प्रयास से 'कालाजार' नाम की ये बीमारी अब तेज़ी से समाप्त होती जा रही है। **कुछ समय पहले तक कालाजार का प्रकोप 4 राज्यों के 50 से अधिक जिलों में फैला हुआ था, लेकिन अब ये बीमारी, बिहार और झारखण्ड के 4 जिलों तक ही सिमटकर रह गई है। मुझे विश्वास है, बिहार-झारखण्ड के लोगों का सामर्थ्य, उनकी जागरूकता इन चार जिलों से भी 'कालाजार' को समाप्त करने में सरकार के प्रयासों को मदद करेगी। 'कालाजार'- प्रभावित क्षेत्रों के लोगों से भी मेरा आग्रह है कि वो दो बातों का ज़रूर ध्यान रखें। एक है– सेन्ड फ्लाई या बालू मक्खी पर नियंत्रण और दूसरा, जल्द-से-जल्द इस रोग की पहचान और पूरा इलाज। 'कालाजार' का इलाज आसान है, इसके लिए काम आने वाली दवाएँ भी बहुत कारगर होती हैं। बस आपको सतर्क रहना है। बुखार हो तो लापरवाही ना बरतें और बालू मक्खी को खत्म करने वाली दवाइयों का छिड़काव भी करते रहें। ज़रा सोचिए, हमारा देश जब 'कालाजार' से भी मुक्त हो जाएगा, तो ये हम सभी के लिए कितनी खुशी की बात होगी। सबके प्रयास की इसी भावना से हम भारत को 2025 तक टी.बी. मुक्त करने के लिए भी काम कर रहे हैं। आपने देखा होगा, बीते दिनों, जब टी.बी. मुक्त भारत अभियान शुरू हुआ, तो हज़ारों लोग टी.बी. मरीज़ों की मदद के लिए आगे आए। ये लोग निक्षय मित्र बनकर, टी.बी. के मरीज़ों की देखभाल कर रहे हैं, उनकी आर्थिक मदद कर रहे हैं। जनसेवा और जनभागीदारी की यही शक्ति, हर मुश्किल लक्ष्य को प्राप्त करके ही दिखाती है।**

मेरे प्यारे देशवासियो, हमारी परम्परा और संस्कृति का माँ गंगा से अटूट नाता है। गंगा जल हमारी जीवनधारा का अभिन्न हिस्सा रहा है और हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है–

नमामि गंगे तव पाद पंकजं,
सुर असुरै: वन्दित दिव्य रूपम्।
भुक्तिम् च मुक्तिम् च ददासि नित्यम्,
भाव अनुसारेण सदा नराणाम्।।

अर्थात् हे माँ गंगा! आप अपने भक्तों को, उनके भाव के अनुरूप सांसारिक सुख, आनन्द और मोक्ष प्रदान करती हैं। सभी आपके पवित्र चरणों का वन्दन करते हैं। मैं भी आपके पवित्र चरणों में अपना प्रणाम अर्पित करता हूँ। ऐसे में सदियों से कल-कल बहती माँ गंगा को स्वच्छ रखना हम सबकी बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। इसी उद्देश्य के साथ

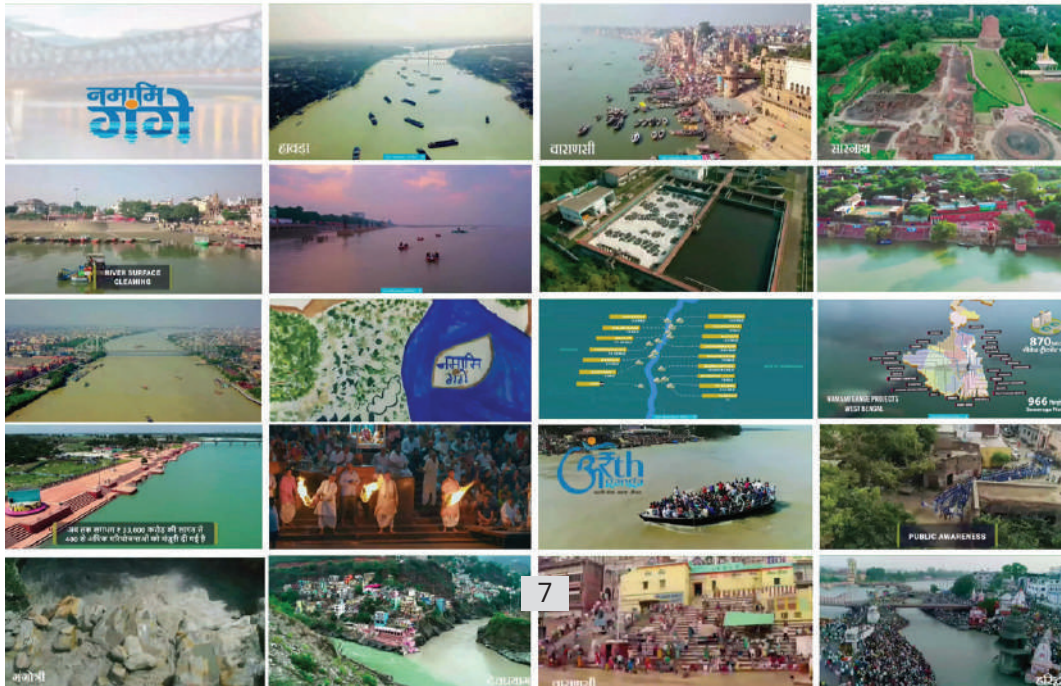

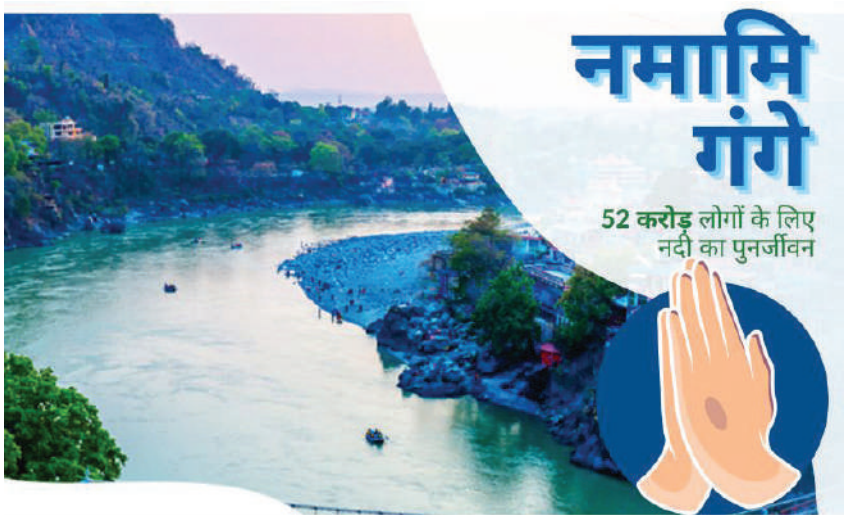

आठ साल पहले हमने, 'नमामि गंगे अभियान' की शुरुआत की थी। **हम सभी के लिए यह गौरव की बात है कि भारत की इस पहल को आज दुनियाभर की सराहना मिल रही है। यूनाइटेड नेशन्स ने 'नमामि गंगे' मिशन को इकोसिस्टम को रिस्टोर करने वाले दुनिया के टॉप टेन इनिसेटिव में शामिल किया है। ये और भी ख़ुशी की बात है कि पूरे विश्व के 160 ऐसे इनिशिएटिव में 'नमामि गंगे' को यह सम्मान मिला है।**

साथियो, 'नमामि गंगे' अभियान की सबसे बड़ी ऊर्जा लोगों की निरन्तर सहभागिता है। 'नमामि गंगे' अभियान में गंगा प्रहरियों और गंगा दूतों की भी बड़ी भूमिका है। वे पेड़ लगाने, घाटों की सफाई, गंगा आरती, नुक्कड़ नाटक, पेंटिंग और कविताओं के ज़रिए जागरूकता फैलाने में जुटे हैं। इस अभियान से बायोडायवर्सिटी में भी काफ़ी सुधार देखा जा रहा है। हिल्सा मछली, गंगा डॉल्फिन और कछुओं की विभिन्न प्रजातियों की संख्या में काफ़ी वृद्धि हुई है। गंगा का इकोसिस्टम क्लीन होने से आजीविका के अन्य अवसर भी बढ़ रहे हैं। यहाँ मैं 'जलज आजीविका मॉडल' की चर्चा करना चाहूँगा, जो कि बायोडायवर्सिटी को ध्यान में रख कर तैयार किया गया है। इस टूरिज़्म-बेस्ड बोट सफारी को 26 लोकेशन पर लॉन्च किया गया है। जाहिर है, 'नमामि गंगे' मिशन का विस्तार, उसका दायरा, नदी की सफाई से कहीं ज़्यादा बड़ा है। ये जहाँ हमारी इच्छाशक्ति और अथक प्रयासों का एक प्रत्यक्ष प्रमाण है, वहीं ये पर्यावरण संरक्षण की दिशा में विश्व को भी एक नया रास्ता दिखाने वाला है।

मेरे प्यारे देशवासियो, जब हमारी संकल्प शक्ति मज़बूत हो, तो बड़ी-से-बड़ी चुनौती भी आसान हो जाती है। इसकी मिसाल पेश की है– सिक्किम के थेगू गाँव के 'संगे शेरपा जी' ने। ये पिछले 14 साल से 12,000 फीट से भी ज़्यादा की ऊँचाई पर पर्यावरण संरक्षण के काम में जुटे हुए हैं। संगेजी ने सांस्कृतिक और पौराणिक महत्त्व की सोमगो लेक को स्वच्छ रखने का बीड़ा उठा लिया है। अपने अथक प्रयासों से उन्होंने इस ग्लेशियर लेक का रंग-रूप ही बदल डाला है। साल 2008 में संगे शेरपाजी ने जब स्वच्छता का यह अभियान शुरू किया था, तब उन्हें कई मुश्किलों का सामना करना पड़ा, लेकिन देखते-ही-देखते उनके इस नेक कार्य में युवाओं और ग्रामीणों के साथ ही पंचायत का भी भरपूर सहयोग मिलने लगा। आज आप अगर सोमगो लेक को देखने जाएँगे तो वहाँ चारों ओर आपको बड़े-बड़े गार्बेज़ बिन्स मिलेंगे। अब यहाँ जमा हुए कूड़े-कचरे को रिसाइकलिंग के लिए भेजा जाता है। यहाँ आने वाले पर्यटकों को कपड़े से बने गार्बेज़ बिन्स भी दिए जाते हैं ताकि कूड़ा-कचरा इधर-उधर न फेंके। अब बेहद साफ़-सुथरी हो चुकी इस झील को देखने हर साल करीब 5 लाख पर्यटक यहाँ पहुँचते हैं। **सोमगो लेक के संरक्षण के इस अनूठे प्रयास के लिए संगे शेरपाजी को कई संस्थाओं ने सम्मानित भी किया है। ऐसी ही कोशिशों की बदौलत आज सिक्किम की गिनती भारत के सबसे स्वच्छ राज्यों में होती है। मैं संगे शेरपाजी और उनके साथियों के साथ-साथ देशभर में पर्यावरण संरक्षण के नेक प्रयास में जुटे लोगों की भी हृदय से प्रशंसा करता हूँ।**

साथियो, मुझे ख़ुशी है कि 'स्वच्छ भारत मिशन' आज हर भारतीय के मन में रच-बस चुका है। साल 2014 में इस जन आन्दोलन के शुरू होने के साथ ही इसे नई ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए, लोगों ने कई अनूठे प्रयास किए हैं और

ये प्रयास सिर्फ़ समाज के भीतर ही नहीं, बल्कि सरकार के भीतर भी हो रहे हैं। लगातार इन प्रयासों का परिणाम यह है– कूड़ा-कचरा हटने के कारण, बिन ज़रूरी सामान हटने के कारण, दफ़्तरों में काफ़ी जगह खुल जाती है, नया स्पेस मिल जाता है। पहले जगह के अभाव में दूर-दूर किराए पर दफ़्तर रखने पड़ते थे। इन दिनों ये साफ़-सफ़ाई के कारण इतनी जगह मिल रही है कि अब एक ही स्थान पर सारे दफ़्तर बैठ रहे हैं। **पिछले दिनों सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने भी मुम्बई में, अहमदाबाद में, कोलकता में, शिलांग में, कई शहरों में अपने दफ़्तरों में भरपूर प्रयास किया और उसके कारण आज उनको दो-दो, तीन-तीन मंजिलें, पूरी तरह से नए सिरे से काम में आ सकें, ऐसी उपलब्ध हो गईं। ये अपने आप में स्वच्छता के कारण हमारे संसाधनों का ऑप्टिमम यूटिलाइजेशन का उत्तम अनुभव आ रहा है। समाज में भी गाँव-गाँव, शहर-शहर में भी उसी प्रकार से दफ़्तरों में भी ये अभियान देश के लिए भी हर प्रकार से उपयोगी सिद्ध हो रहा है।**

मेरे प्यारे देशवासियो, हमारे देश में अपनी कला-संस्कृति को लेकर एक नई जागरूकता आ रही है, एक नई चेतना जागृत हो रही है। 'मन की बात' में हम अक्सर ऐसे उदाहरणों की चर्चा भी करते हैं, जैसे कला, साहित्य और संस्कृति समाज की सामूहिक पूँजी होते हैं, वैसे ही इन्हें आगे बढ़ाने की ज़िम्मेदारी भी पूरे समाज की होती है। ऐसा ही एक सफल प्रयास लक्षद्वीप में हो रहा है। यहाँ कल्पेनी द्वीप पर एक क्लब है– कूमेल ब्रदर्स चैलेंजर्स क्लब। ये क्लब युवाओं को स्थानीय संस्कृति और पारम्परिक कलाओं के संरक्षण के लिए प्रेरित करता है। यहाँ युवाओं को लोकल आर्ट

कोलकली, परीचाकली, किलिप्पाट्ट और पारम्परिक गानों की ट्रेनिंग दी जाती है, यानी पुरानी विरासत, नई पीढ़ी के हाथों में सुरक्षित हो रही है, आगे बढ़ रही है और साथियो मुझे ख़ुशी है इस प्रकार के प्रयास देश में ही नहीं; विदेश में भी हो रहे हैं। हाल ही में दुबई से ख़बर आई कि वहाँ के कलारी क्लब ने गिनीज़ बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज़ किया है। कोई भी सोच सकता है कि दुबई के क्लब ने रिकॉर्ड बनाया तो इसमें भारत से क्या सम्बन्ध? दरअसल ये रिकॉर्ड भारत की प्राचीन मार्शल आर्ट कलारीपयट्टु से जुड़ा है। ये रिकॉर्ड एक साथ सबसे अधिक लोगों के द्वारा कलारी के प्रदर्शन का है। कलारी क्लब दुबई ने दुबई पुलिस के साथ मिलकर ये प्लान किया और यूएई के नेशनल डे में प्रदर्शित किया। **इस आयोजन में 4 साल के बच्चों से लेकर 60 वर्ष तक के लोगों ने कलारी की अपनी क्षमता का बेहतरीन प्रदर्शन किया। अलग-अलग पीढ़ियाँ कैसे एक प्राचीन परम्परा को आगे बढ़ा रही हैं, पूरे मनोयोग से बढ़ा रही हैं, ये उसका अद्भुत उदाहरण है।**

साथियो, 'मन की बात' के श्रोताओं को मैं कर्नाटका के गडक ज़िले में रहने वाले 'क्वेमश्रीजी' के बारे में भी बताना चाहता हूँ। 'क्वेमश्री' दक्षिण में कर्नाटका की कला-संस्कृति को पुनर्जीवित करने के मिशन में पिछले 25 वर्षों से अनवरत लगे हुए हैं। आप कल्पना कर सकते हैं कि उनकी तपस्या कितनी बड़ी है। पहले तो वो होटल मैनेज़मेंट के प्रोफेशन से जुड़े थे, लेकिन अपनी संस्कृति और परम्परा को लेकर उनका लगाव इतना गहरा था कि उन्होंने इसे अपना मिशन बना लिया। उन्होंने 'कला चेतना' के नाम से एक मंच बनाया। ये मंच आज कर्नाटका के और देश-विदेश के कलाकारों के कई कार्यक्रम आयोजित करता है। इसमें लोकल आर्ट और कल्चर को प्रमोट करने के लिए कई इनोवेटिव काम भी होते हैं।

साथियो, अपनी कला-संस्कृति के प्रति देशवासियों का ये उत्साह 'अपनी विरासत पर गर्व' की भावना का ही प्रकटीकरण है। हमारे देश में तो हर कोने में ऐसे कितने ही रंग बिखरे हैं। हमें भी उन्हें सजाने–सवाँरने और संरक्षित करने के लिए निरन्तर काम करना चाहिए।

मेरे प्यारे देशवासियो, देश के अनेक क्षेत्र में बाँस से अनेक सुन्दर और उपयोगी चीज़ें बनाई जाती हैं, विशेष रूप से आदिवासी क्षेत्रों में बाँस के कुशल कारीगर, कुशल कलाकार हैं। जब से देश ने बैम्बू से जुड़े अंग्रेजों के ज़माने के कानूनों को बदला है, इसका एक बड़ा बाज़ार तैयार हो गया है। महाराष्ट्र के पालघर जैसे क्षेत्रों में भी आदिवासी समाज के लोग बैम्बू से कई खूबसूरत प्रोडक्ट बनाते हैं। बैम्बू से बनने वाले बॉक्सेस, कुर्सी, चायदानी, टोकरियाँ, और ट्रे जैसी चीज़ें खूब लोकप्रिय हो रही हैं। यही नहीं, ये लोग बैम्बू घास से खूबसूरत कपड़े और सजावट की चीज़ें भी बनाते हैं। इससे आदिवासी महिलाओं को रोज़गार भी मिल रहा है और उनके हुनर को पहचान भी मिल रही है।

साथियो, कर्नाटक के एक दम्पत्ति सुपारी के रेशे से बने कई यूनिक प्रोडक्ट्स इंटरनेशनल मार्केट तक पहुँचा रहे हैं। कर्नाटक में शिवमोगा के ये दम्पत्ति हैं – श्रीमान सुरेश और उनकी पत्नी श्रीमती मैथिली। ये लोग सुपारी के रेशे से ट्रे, प्लेट और हैंडबैग से लेकर कई डेकोरेटिव चीज़ें बना रहे हैं। इसी रेशे से बनी चप्पलें भी आज खूब पसन्द की जा रही हैं। उनके प्रोडक्ट्स आज लंदन और यूरोप के दूसरे बाज़ारों तक में बिक रहे हैं। यही तो हमारे प्राकृतिक संसाधनों और पारम्परिक हुनर की खूबी है, जो सबको पसंद आ रही है। **भारत के इस पारम्परिक ज्ञान में दुनिया सेंसटेबल फीचर के रास्ते देख रही है। हमें ख़ुद भी इस दिशा में ज़्यादा-से-ज़्यादा जागरूक होने की ज़रूरत है। हम खुद भी ऐसे स्वदेशी और लोकल प्रोडक्ट इस्तेमाल करें और दूसरों को भी ये उपहार में दें। इससे हमारी पहचान भी मज़बूत होगी, स्थानीय अर्थव्यवस्था भी मज़बूत होगी और बड़ी संख्या में लोगों का भविष्य भी उज्ज्वल होगा।**

मेरे प्यारे देशवासियो, अब हम धीरे-धीरे 'मन की बात' के 100वें एपिसोड के अभूतपूर्व पड़ाव की ओर बढ़ रहे हैं। मुझे कई देशवासियों के पत्र मिले हैं, जिनमें उन्होंने 100वें एपिसोड के बारे में बड़ी जिज्ञासा प्रकट की है। 100वें एपिसोड में हम क्या बात करें, उसे कैसे खास बनाएँ, इसके लिए आप मुझे अपने सुझाव भेजेंगे तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा। अगली बार हम वर्ष 2023 में मिलेंगे। मैं आप सभी को वर्ष 2023 की शुभकामनाएँ देता हूँ। ये वर्ष भी देश के लिए खास रहे, देश नई ऊँचाइयों को छूता रहे, हमें मिलकर संकल्प भी लेना है, साकार भी करना है। इस समय बहुत से लोग छुट्टियों के मूड में भी हैं। आप पर्वों को, इन अवसरों का खूब आनन्द लीजिए, लेकिन थोड़ा सतर्क भी रहिए। आप भी देख रहे हैं कि दुनिया के कई देशों में कोरोना बढ़ रहा है, इसलिए हमें मास्क और हाथ धुलने जैसी सावधानियों का और ज़्यादा ध्यान रखना है। हम सावधान रहेंगे, तो सुरक्षित भी रहेंगे और हमारे उल्लास में कोई रुकावट भी नहीं पड़ेगी। इसी के साथ आप सभी को एक बार फिर ढेरों शुभकामनाएँ। बहुत-बहुत धन्यवाद, नमस्कार।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

अमृत काल

'विकसित भारत' के पथ पर देश अग्रसर

"2022 वाकई कई मायनों में बहुत ही प्रेरक रहा, अद्भुत रहा। इस साल भारत ने अपनी आज़ादी के 75 वर्ष पूरे किए और इसी वर्ष 'अमृत काल' का प्रारम्भ हुआ। इस साल देश ने नई रफ़्तार पकड़ी, सभी देशवासियों ने एक से बढ़कर एक काम किया। 2022 की विभिन्न सफलताओं ने आज पूरे विश्व में भारत के लिए एक विशेष स्थान बनाया है।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' के सम्बोधन में)

"वर्ष 2022 में विभिन्न क्षेत्रों में हासिल की गई प्रगति के कारण यह वर्ष मज़बूत आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में भारत की यात्रा में एक महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह 2047 तक नए भारत के निर्माण के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा परिकल्पित 'अमृत काल' की शुरुआत का प्रतीक है।"

-एम. वेंकैया नायडू
भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति

प्रधानमंत्री ने 'अमृत काल' का मंत्र दिया है – एक चौथाई सदी की अवधि, जिसमें भारत को एक सभ्यतागत और वैश्विक शक्ति का दर्जा हासिल करने का प्रयास करना चाहिए, जिसकी पहचान एक ऐसे देश के रूप में हो, जिसमें चीज़ों को अलग तरीके से करने की अपनी क्षमता है। 'अमृत काल' भारत की स्वतंत्रता के 75वें वर्ष से लेकर 2047 में स्वतंत्रता की शताब्दी पूरे होने तक का है। 'अमृत काल' नए भारत के लिए केवल एक विज़न ही नहीं, बल्कि एक महत्त्वपूर्ण और निर्धारक अवधि है, जिसमें अनन्त सम्भावनाएँ समाई हुई हैं।

इसी अवधि के दौरान हमारे कार्य, प्रयास, सहयोग और भागीदारियाँ हमारी आकांक्षाओं और उन अनगिनत नायकों की आकांक्षाओं के भारत को साकार और परिभाषित करेंगी, जिन्होंने इसकी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया।

2022 में 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के तहत अपने गौरवशाली इतिहास का जश्न मनाते हुए भारत ने अपनी स्वतंत्रता की यात्रा के 75 साल पूरे कर लिए। इसके साथ ही उन आदर्शों को साकार करने की दिशा में संकल्पबद्ध होकर आगे बढ़ने का भारी उत्तरदायित्व भी आता है, जिन्होंने स्वतंत्रता संघर्ष को क्रियाशील और प्रेरित किया था; उत्तरदायित्व अपने पुरखों के सपनों को हक़ीक़त में बदलने और एक प्रगतिशील, आधुनिक एवं विकसित भारत के निर्माण करने का।

हमारे स्वतंत्रता आन्दोलन के नेताओं में भारत को स्वाधीन करने और विश्व में फिर से अपने को महाशक्ति के रूप में स्थापित करने की तीव्र आकांक्षा थी। आज आज़ादी के स्वर्णिम युग की ओर बढ़ते हुए हमें उनके आदर्शों से एक नए भारत का विज़न मिलता है; एक ऐसा भारत, जो अपनी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक शक्ति के प्रति सचेत है, विविधता में एकता से संचालित है; एक ऐसा भारत, जो अपनी क्षमता का भरपूर उपयोग करने और दुनिया को नई अवधारणाएँ, नए विचार और नए आविष्कार प्रदान करने में सक्षम है; एक ऐसा भारत, जो अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करता है और उन्हें अक्षुण्ण रखता है; एक ऐसा भारत, जो सहयोग और शासन का नया विज़न प्रदान करता है, एक ऐसा भारत, जो अपने स्वतंत्र विचार रखता है और आत्मनिर्भरता को फिर से परिभाषित करता है।

'अमृत काल' इन आकांक्षाओं को पूरा करने और एक मज़बूत, आत्मनिर्भर न्यू इंडिया का आधार तैयार करने का समय है।

वैदिक शब्दावली में 'अमृत-काल' को नया चरण शुरू करने का उपयुक्त समय माना गया है। इस प्रकार यह आगामी 25 वर्षों के दौरान भारत के लिए काम की दिशा तय करने का सबसे उपयुक्त और शुभ मुहूर्त है, जो इस राष्ट्र, युवाओं और लोगों के भविष्य का भी निर्धारण करेगा।

भविष्य की रूपरेखा तैयार करना जितना महत्त्वपूर्ण है, उतना ही आवश्यक यह मानना भी है कि 2022 एक ऐसा वर्ष रहा, जिसमें राष्ट्र ने नई गति प्राप्त की और वैश्विक मोर्चे पर एक शक्तिशाली स्थान हासिल किया, जिससे 'अमृत काल' का शुभारम्भ हुआ।

पिछले कुछ वर्षों के दौरान भारत में विभिन्न प्रकार का विकास देखने को मिला है। देश ने कई क्षेत्रों में नई ऊँचाइयाँ हासिल कीं, चाहे खेल का क्षेत्र हो या स्टार्ट-अप का। स्वास्थ्य, प्रौद्योगिकी, अन्तरिक्ष और रक्षा क्षेत्रों में क्षेत्रीय विकास कई गुणा रहा। भारत ने दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का दर्जा प्राप्त करने से लेकर COVID-19 के 220 करोड़ टीकों का अविश्वसनीय आँकड़ा पार किया; भारत ने 400 अरब डॉलर के निर्यात का आँकड़ा पार किया; लोगों ने 'आत्मनिर्भर भारत' का संकल्प अपनाया; भारत ने अन्तरिक्ष, ड्रोन और रक्षा क्षेत्र में नाम कमाया और अपने पहले स्वदेशी विमान वाहक INS

विक्रांत का स्वागत किया – 2022 ने विकास के हर क्षेत्र में भारत की शक्ति को रेखांकित किया है।

समावेशी विकास और सामाजिक क्षेत्र के विकास की बात करें तो भारत लगातार ऊपर की ओर अग्रसर है। 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना ने सामूहिक-सामुदायिक भागीदारी और स्वतंत्रता के 75वें वर्ष में भारत में 'हर घर तिरंगा' जैसे बड़े अभियान के साथ मिलकर अमर इतिहास का एक अध्याय सफलतापूर्वक लिखा है।

सबसे विशाल और सबसे विविध लोकतंत्र के रूप में उभरता भारत, G20 अध्यक्ष के तौर पर इतिहास रच रहा है और विश्व में अपने लोकतांत्रिक लोकाचार और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के दृष्टिकोण का प्रसार कर रहा है।

आज का भारत, अनेक क्षेत्रों में आगे बढ़ने का मंच तैयार कर चुका है और बहुआयामी राष्ट्रीय प्रगति की दिशा में कार्य होता दिखाई दे रहा है और अब 'अमृत काल' की तैयारी में जुटा भारत, कहीं अधिक उत्साह और परिमाण में विकास आरम्भ करने के लिए कमर कस रहा है।

15 अगस्त को जब माननीय प्रधानमंत्री ने लाल क़िले की प्राचीर से राष्ट्र के नाम अपने सम्बोधन में कहा, "इस 'अमृत काल' में हमारा लक्ष्य एक विकसित भारत की दिशा में काम करना है", तो उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि 'अमृत काल' हर एक भारतीय के लिए कर्त्तव्यों और विकास का काल हो।

'अमृत काल' की रूपरेखा तैयार करते समय उन्होंने पंच प्रण बताए, जो एक नए भारत की अटूट नींव रखेंगे।

यह 'अमृत काल', प्रधानमंत्री का विज़न साकार करके स्वराज की शताब्दी मनाने तक, भारत को बदलने और इसे एक महाशक्ति बनाने का सामूहिक अवसर प्रदान करता है।

लेकिन राष्ट्र को बदलने और बनाने की प्रक्रिया 'जन भागीदारी' के बिना अधूरी है। 2022 में जन भागीदारी की अटूट भावना भी देखी गई, जब देश के कोने-कोने में हर भारतीय, विशेष रूप से युवाओं की भागीदारी रही। 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' ने जैसे-जैसे देश में राष्ट्रभक्ति का माहौल बनाया, देश के हर नागरिक के योगदान ने हर आन्दोलन को जन-आन्दोलन में बदल दिया। इसलिए 'जन भागीदारी', 'अमृत काल' में भी राष्ट्रीय सफलता की आधारशिला बनी रहेगी।

अपने दूरद्रष्टा पूर्वजों के आदर्श क़ायम रखते हुए और समाज की आकांक्षाओं का लक्ष्य हासिल करते हुए, 'अमृत काल' वास्तव में एक विकसित और आत्मनिर्भर भारत की नींव को दृढ़ता प्रदान करने का काल है।

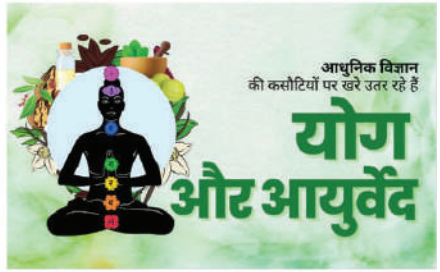

प्रधानमंत्री का 'अमृत काल' का विज़न

विश्वगुरु के रूप में भारत के फिर से उभरने की दिशा में एक बड़ी छलाँग

एम. वेंकैया नायडू
भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति

वर्ष 2022 में विभिन्न क्षेत्रों में हासिल की गई प्रगति के कारण यह वर्ष मज़बूत आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में भारत की यात्रा में एक महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह 2047 तक नए भारत के निर्माण के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा परिकल्पित 'अमृत काल' की शुरुआत का प्रतीक है। स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में देश भर में 'जन भागीदारी' की भावना से 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के समारोहों का आयोजन, भारत की उपलब्धियों को प्रदर्शित करने और भविष्य का रोडमैप तैयार करने का प्रयास है।

प्रधानमंत्री ने स्वतंत्रता दिवस के सम्बोधन में 2047 तक भारत को पूरी तरह से विकसित राष्ट्र बनाने के अपने दृष्टिकोण को पाँच प्रतिज्ञाओं या संकल्पों– 'पंच प्रण' के माध्यम से रेखांकित किया था। ये हैं : 1. विकसित भारत के दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ना, 2. औपनिवेशिक मानसिकता के हर निशान को हटाना, 3. अपनी जड़ों पर गर्व करना, 4. राष्ट्र की एकता को मज़बूत करना और 5. सभी नागरिकों में कर्त्तव्य की भावना को बढ़ावा देना।

दिसम्बर, 2022 में भारत का G20 की अध्यक्षता ग्रहण करना, हाल के वर्षों में एक महत्त्वपूर्ण विश्व नेता के रूप में इसकी विकास यात्रा की प्रमुख उपलब्धियों में से एक है। G20 की अध्यक्षता एक बड़ी ज़िम्मेदारी है और यह भारत पर दुनिया के भरोसे को भी दर्शाता है। भारत ने G20 की अध्यक्षता ग्रहण करते समय, 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' के अति-महत्त्वपूर्ण विषय के माध्यम से एकता की सार्वभौमिक भावना को बढ़ावा देने के लिए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के अपने दृष्टिकोण की घोषणा की।

आइए, भारत की असाधारण विकास यात्रा को दर्शाने वाले कुछ अन्य संकेतकों पर नज़र डालते हैं। वर्ष 2022 में भारत दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा। देश की आर्थिक वृद्धि 2021-22 में 83.57 बिलियन डॉलर के अब तक के अधिकतम वार्षिक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) प्रवाह और एक्सपोर्ट्स के 400 बिलियन डॉलर तक पहुँचने में भी परिलक्षित होती है। इस बीच, नवम्बर, 2022 तक डिजिटल भुगतान बढ़कर 11.90 लाख करोड़ रुपये तक हो जाने से एक बड़ा बदलाव आया है। यह विशेष रूप से रेहड़ी-पटरी वालों और अन्य छोटे उपयोगकर्ताओं के लिए वरदान साबित हो रहा है।

कृषि के मोर्चे पर भारतीय किसान देश की अर्थव्यवस्था के विकास में योगदान देना जारी रखे हुए है। उदाहरण के लिए, दिसम्बर, 2022 में खाद्यान्न उत्पादन बढ़कर 315.72 मिलियन टन हो गया (चौथे अग्रिम अनुमान के अनुसार) जो अब तक का सबसे अधिक है। आज भारत गेहूँ के साथ-साथ चावल के उत्पादन में भी दुनिया में दूसरे स्थान पर है।

कोरोना संक्रमण के प्रकोप के बाद, हमारे वैक्सीन निर्माता जीवन बचाने के लिए आगे आए। हमारे डॉक्टरों, पैरामेडिकल कर्मचारियों और विशाल स्वास्थ्य सेवा नेटवर्क के सहायक कर्मचारियों ने भी इसमें पूरा योगदान दिया। कोविड-19 के खतरे को रोकने के लिए रिकॉर्ड समय में देश भर में 220 करोड़ से अधिक वैक्सीन की खुराक दी जा चुकी हैं।

लाखों वंचितों के चिकित्सा उपचार के लिए सितम्बर, 2018 में शुरू की गई आयुष्मान भारत योजना ने 2022 में गति पकड़ी और इस वर्ष केवल दिसम्बर में ही इस योजना के अन्तर्गत 1.3 करोड़ से अधिक कार्ड जारी किए गए।

इस वर्ष अक्टूबर में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 5G सेवाओं की शुरुआत संचार परिदृश्य में क्रान्ति लाने की दिशा में एक बड़ी छलाँग है, जिसने भारत को वैश्विक मंच पर बड़ी शक्तियों में शामिल कर दिया है।

यदि हम पुनरुत्थानशील 'नए भारत' की बढ़ती उद्यमशीलता की भावना पर एक सरसरी नज़र डालें, तो देश में नवाचार और स्टार्ट-अप के पोषण के लिए एक मज़बूत पारिस्थितिकी तन्त्र के निर्माण के लिए 2016 में शुरू की गई स्टार्ट-अप इंडिया पहल, 86,000 से अधिक स्टार्ट-अप्स के साथ देश की तेज़ी से हासिल की गई एक बड़ी सफलता रही है।

भारत ने अन्तरिक्ष क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक और बड़ा कदम तब उठाया, जब देश के निजी क्षेत्र द्वारा निर्मित पहले रॉकेट 'विक्रम-एस' ने 18 नवम्बर, 2022 को उड़ान भरी। भारत का पहला स्वदेशी विमानवाहक पोत, आईएनएस विक्रांत, रक्षा के सामरिक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण अपलब्धि का एक बड़ा उदाहरण है।

अगस्त में प्रधानमंत्री मोदी के 'हर घर तिरंगा' के आह्वान पर देश भर के लाखों घरों में तिरंगा फहराता देखा गया, जो एकता और दिल को छू लेने वाली एकजुटता की भावना को दर्शाता है। काशी-तमिल संगमम् सहित देश भर में कई आयोजनों ने एक समान पहचान की भावना और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देकर 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की अवधारणा को प्रदर्शित किया।

वर्ष 2022 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दुनिया भर में सस्टेनेबल जीवन शैली को बढ़ावा देने के लिए एक प्रमुख कार्यक्रम, मिशन LiFE का शुभारम्भ किया। महत्त्वपूर्ण रूप से COP 27 की शर्म अल शेख कार्यान्वयन योजना के निर्णय में जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने के लिए मिशन LiFE के मूल तत्वों का उल्लेख किया गया था।

इस प्रकार वर्ष 2022 के दौरान कुछेक क्षेत्रों में किए गए यहाँ वर्णित प्रयास, पुनरुत्थानशील भारत के 'अमृत काल' में कदम रखने और एक शक्तिशाली देश के रूप में विश्व समुदाय में अपने लिए उचित स्थान बनाने की दिशा में आगे बढ़ने के लिए उसके विकास पथ को दर्शाते हैं।

भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू को प्रधानमंत्री के 'अमृत काल' के विज़न के बारे में बात करते हुए सुनने के लिए QR कोड को स्कैन करें।

आत्मनिर्भर भारत...आत्मनिर्भर कृषि... प्राकृतिक कृषि

आचार्य देवव्रत
राज्यपाल, गुजरात

भारत देश ने अपनी आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण कर अपने 'अमृत काल' में प्रवेश किया है। भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में आज भारत तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। भारत देश ने 'सबका साथ, सबका विकास' कर्म-मंत्र के साथ राष्ट्र की उन्नति में जनशक्ति के सामर्थ्य को जोड़ा है। आज भारत दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर समर्थ भारत-सशक्त भारत के संकल्प के साथ आत्मनिर्भर भारत के विकास लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पण भाव से अहर्निश आगे बढ़ रहा है।

भारत वर्ष 2047 में अपनी आज़ादी का शताब्दी वर्ष मनाएगा। प्रधानमंत्री ने 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का संकल्प दोहराते हुए लाल क़िले की प्राचीर से 'पंच प्रण' द्वारा 'अमृत काल' के इस नए युग के लिए देशवासियों को प्रेरणा दी है। वर्ष 2047 तक विकसित भारत का संकल्प, गुलामी की मानसिकता से मुक्ति, अपनी विरासत पर गर्व, एकता एवं एकजुटता और नागरिकों का कर्त्तव्य जैसे 'पंच प्रण' से उन्होंने प्रत्येक भारतीय को श्रेष्ठ राष्ट्र के निर्माण के लिए प्रेरित किया है।

आज़ादी के इस 'अमृत काल' में विकसित भारत के निर्माण के लिए हमें जनशक्ति को प्रेरित कर रासायनिक कृषि की गुलामी से मुक्ति पाने का भी संकल्प लेना है। आज समग्र विश्व रासायनिक कृषि के दुष्परिणामों से त्रस्त है। विशेषज्ञ बता रहे हैं कि ग्लोबल वार्मिंग की समस्या के पीछे 24 प्रतिशत रासायनिक कृषि एवं जैविक कृषि ज़िम्मेदार है। रासायनिक उर्वरकों के अँधाधुन्ध उपयोग से देश की उपजाऊ ज़मीन बंजर हो रही है। रासायनिक उर्वरक एवं कीटनाशकों के लिए केन्द्र सरकार को प्रतिवर्ष लगभग दो लाख करोड़ का आर्थिक बोझ उठाना पड़ रहा है। रासायनिक कृषि और दूषित खाद्यान्न से लोग कैंसर, डायबिटीज़ जैसे असाध्य रोगों के शिकार हो रहे हैं। इन सभी समस्याओं से मुक्ति पाने का सक्षम उपाय प्राकृतिक कृषि है। प्राकृतिक कृषि से देशी गाय का संरक्षण होगा। किसान और खेती समृद्ध बनेंगे।

आत्मनिर्भर भारत के लिए आत्मनिर्भर किसान होना आवश्यक है और किसानों की आत्मनिर्भरता के लिए प्राकृतिक कृषि ही श्रेष्ठ विकल्प है। एक देसी गाय के गोबर-गौमूत्र से हम 30 एकड़ भूमि में प्राकृतिक कृषि कर सकते हैं। देसी गाय के गोबर-गौमूत्र, बेसन, गुड़ और मिट्टी के मिश्रण से बनाया हुआ जीवामृत और घनजीवामृत भूमि में सूक्ष्म जीवाणु और केंचुए जैसे जीवों की वृद्धि करते हैं, जो भूमि की उपजाऊ क्षमता बढ़ाते हैं।

हिमाचल प्रदेश में जब मैं गवर्नर था, तब किसान बागबान के खेत में जाता था। मैंने उनको प्रेरित किया और 50 हज़ार किसानों को प्राकृतिक कृषि से जोड़ा। आज वहाँ डेढ़ लाख किसान प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। गुजरात में हमने प्राकृतिक कृषि के साथ लगभग तीन लाख किसानों को जोड़ दिया है और गुजरात के डांग ज़िले को प्राकृतिक कृषि सम्पन्न ज़िला घोषित किया गया है। पिछले दिनों मैंने उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गोवा, और हरियाणा जैसे राज्यों के प्रवास किए और किसानों को प्राकृतिक कृषि के लिए प्रेरित किया। आन्ध्र प्रदेश में भी बड़ी संख्या में किसान प्राकृतिक कृषि कर रहे हैं।

बीजामृत, जीवामृत, घनजीवामृत, आच्छादन, वाप्सा एवं बहुफसल के सिद्धान्तों का अनुपालन करते हुए अगर पूरी विधि से प्राकृतिक कृषि की जाए तो उत्पादन कम नहीं होगा। स्वास्थ्यप्रद कृषि उत्पादों से लोगों के स्वास्थ्य की रक्षा होगी। जल- ज़मीन और पर्यावरण की रक्षा होगी। देसी गाय का पालन-सम्वर्धन होगा, किसानों की लागत कम होगी और उत्पादन बढ़ेगा। दाम भी सही मिलेगा, जिससे किसान समृद्ध होंगे। काम एक और लाभ अनेक। इस 'अमृत काल' में हमें संकल्प लेना है– प्राकृतिक कृषि को अपनाकर विकसित और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में अपना यत्किंचित योगदान देंगे।

भारतीय अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाने की राह

डॉ. अरविन्द पनगढ़िया
भारतीय अर्थशास्त्री

2022 भारत के लिए एक ऐतिहासिक वर्ष था, जब देश युनाइटिड किंगडम को पछाड़ कर दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया। भारत, विश्व की सबसे तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा है और अगले पाँच वर्ष में दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में लगातार अग्रसर है। 2022 में ही देश ने 2 अरब कोविड-19 टीकों का आँकड़ा पार किया और मेरे जैसे भारतीय प्रवासियों के लिए दो साल से भी अधिक समय बाद एक बार फिर से स्वदेश आने-जाने की यात्राएँ शुरू करने का मार्ग प्रशस्त किया।

भारत 'अमृत काल' के नए युग में प्रवेश कर चुका है और इसमें सन्देह नहीं कि अगले 25 वर्षों के दौरान देश में परिवर्तन, गत 75 वर्ष की तुलना में कहीं अधिक बड़ा होगा। इसका प्रमुख कारक, गत बीस वर्षों में वैश्विक अर्थव्यवस्था में काफी हद तक एकीकृत हमारी अर्थव्यवस्था और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का पिछले पाँच वर्षों में खड़ा किया गया प्रभावशाली डिजिटल बुनियादी ढाँचा ठोस आधार हैं। आने वाले वर्षों में हमें अपने शहरों के निर्माण और आधुनिकीकरण पर ध्यान देना चाहिए, हर एक स्तर पर हमारे शैक्षणिक संस्थानों में बड़ा सुधार होना चाहिए, विश्व स्तरीय स्वास्थ्य और परिवहन बुनियादी ढाँचे का निर्माण होना चाहिए और व्यापार-अनुकूल आर्थिक वातावरण प्रदान किया जाना चाहिए, यहाँ तक कि विश्व इस समय जिस कथित बहु-संकट का सामना कर रहा है, उसे देखते हुए मुझे भारतीय सन्दर्भ में मंदी और वैश्विक अर्थव्यवस्था से उत्पन्न चुनौतियों को लेकर सबसे कम चिन्ता है। वैश्विक अर्थव्यवस्था बहुत विशाल है और कोई भी देश, जो अपनी अर्थव्यवस्था को व्यवस्थित करना चाहे, वह इसका लाभ उठा सकता है। वियतनाम और बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में भारत इसकी नवीनतम मिसाल है। कोविड-19 के प्रकोप के बीच भी विश्व वस्तु व्यापार, महामारी से पहले के 19,000 अरब डॉलर के उच्चतम स्तर से बढ़कर 2021 में 22,000 अरब डॉलर पर पहुँच गया। यदि हम विश्व व्यापार में अपनी हिस्सेदारी को मौजूदा 1.7 प्रतिशत से बढ़ाकर 2047 तक 8 प्रतिशत कर सकें तो हम भारत को विकसित अर्थव्यवस्था में बदलने का लक्ष्य दक्षतापूर्वक हासिल कर लेंगे।

अपनी दीर्घकालिक रणनीति में हमें अपना आत्मविश्वास और आशावाद ऊँचा रखते हुए अपने शहरों, शैक्षिक संस्थानों, स्वास्थ्य तथा परिवहन बुनियादी ढाँचे का विस्तार और व्यापार- अनुकूल वातावरण प्रदान करना होगा।

भारत खाद्य और ऊर्जा-सुरक्षा क्षेत्रों में भी अच्छी स्थिति में है, जो हमारे अग्रणी नीतिगत लक्ष्यों में शामिल हैं। हमने सौर और पवन ऊर्जा के क्षेत्र में प्रभावशाली प्रगति की है, लेकिन इस क्षेत्र में अपना पूरा दबदबा बनाने के लिए हमें ग्रीन हाइड्रोजन और बाजरा-आधारित पोषण पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

हाल के वर्षों में भारत का सुदृढ़ और अत्यधिक सुलभ डिजिटल बुनियादी ढाँचा, जिसमें डिजिटल भुगतान प्रणाली और हर किसी को डाटा की सुलभता शामिल हैं, एक बड़ी उपलब्धि रही है। अब इसी बुनियादी ढाँचे पर हम कृत्रिम मेधा (एआई) जैसे क्षेत्रों में नए विकास करने की बेहतर स्थिति में हैं। डिजिटल और एआई युग का आगमन, भारत के लिए इससे अधिक उपयुक्त समय पर नहीं हो सकता था। इन प्रौद्योगिकियों का दोहन करने के लिए युवा सबसे अच्छी स्थिति में हैं और सौभाग्य से भारत में वे बड़ी संख्या में हैं। आने वाले वर्षों में हमें इस बदलाव का सिर्फ एक हिस्सा नहीं, बल्कि इसमें अगुआ होना चाहिए।

आर्थिक दृष्टिकोण से एक अन्य महत्त्वपूर्ण पहलू है कि हमें आयात को निर्बाध रूप से होने देना चाहिए। इन आयात का भुगतान करने के लिए ज़ाहिर है हम निर्यात बढ़ाएँगे। हमें व्यापार बाधाएँ कम करनी चाहिए और समान विचारधारा वाले देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौते करने चाहिए।

अन्त में, मैं इस तथ्य पर बल देना चाहूँगा कि हमें अपनी अर्थव्यवस्था को उदार बनाने की ओर लौटने की आवश्यकता है। किसे भी देश ने अपनी अर्थव्यवस्था खोले बिना 8 से 10 प्रतिशत विकास हासिल नहीं किया है और तभी वह वैश्वीकरण में शामिल हो सका।

'अमृत काल' में आगे बढ़ने और आर्थिक क्षेत्र में असली मायनों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए भारत को भी यह राह पकड़नी चाहिए।

डॉ. अरविन्द पनगढ़िया से भारतीय अर्थव्यवस्था के बारे में और जानने के लिए QR कोड स्कैन करें।

काशी तमिल संगमम्

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना बरकरार

काशी-तमिल संगमम् का विवरण

तमिल संस्कृति और काशी (वाराणसी) के बीच सदियों पुराने सम्बन्धों का अन्वेषण करने, पुष्टि करने और उसका जश्न मनाने के लिए वाराणसी (काशी) में 17 नवम्बर से 16 दिसम्बर, 2022 तक एक महीने के 'काशी तमिल संगमम्' का आयोजन किया गया, जिसके दौरान भारतीय संस्कृति की दो प्राचीन अभिव्यक्तियों के विभिन्न पहलुओं पर विशेषज्ञों/विद्वानों के बीच शैक्षिक आदान-प्रदान, जैसे कि सेमिनार और विचार-विमर्श, आयोजित किए गए, जिसमें दोनों संस्कृतियों के बीच सम्बन्धों और साझा मूल्यों पर ध्यान केन्द्रित किया गया।

काशी-तमिल संगमम् का उद्देश्य

दोनों प्रदेशों के ज्ञान और सांस्कृतिक परम्पराओं को करीब लाना

हमारी साझा विरासत की समझ को उत्पन्न करना

दोनों क्षेत्रों के लोगों के आपसी सम्बन्ध को गहरा करना

प्रमुख विशेषताएँ

'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के हिस्से के रूप में काशी-तमिल संगमम् का उद्देश्य तमिलनाडु और वाराणसी के लोगों के साझा अनुभव और उनकी प्रशंसा तथा लोगों के बीच बन्धन को और मज़बूत करना था।

प्रधानमंत्री ने तमिलनाडु के विभिन्न धार्मिक स्थलों और मठों के **'आधिनम'** (धार्मिक नेताओं) को सम्मानित किया और **13 भाषाओं** में इसके अनुवाद के साथ पुस्तक **'तिरुक्कुरल'** का विमोचन किया।

यह प्रयास **राष्ट्रीय शिक्षा नीति** (NEP) 2020 के अनुरूप है, जिसमें ज्ञान की आधुनिक प्रणालियों के साथ-साथ भारतीय ज्ञान प्रणालियों पर ज़ोर दिया गया है।

IIT मद्रास और **बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय** (BHU) कार्यक्रम के लिए दो कार्यान्वयन एजेन्सियाँ थीं।

संगमम् के दौरान **तमिलनाडु के 2,500 से अधिक प्रतिनिधियों** ने काशी का व्यापक अनुभव प्राप्त करने के लिए विशेष ट्रेनों से यात्रा की और काशी के साथ तमिलनाडु की ऐतिहासिक और शाश्वत निकटता को प्रदर्शित किया। वे **गंगा स्नान, गंगा क्रूज़, गंगा आरती** जैसे अनुभवों के साक्षी बने।

प्रधानमंत्री का आह्वान

"ये हम 130 करोड़ देशवासियों की ज़िम्मेदारी है कि हमें तमिल की इस विरासत को बचाना भी है, उसे समृद्ध भी करना है। अगर हम तमिल को भुलाएँगे तो भी देश का नुकसान होगा और तमिल को बन्धनों में बाँधकर रखेंगे तो भी इसका नुकसान है। हमें याद रखना है - हम भाषा भेद को दूर करें, भावनात्मक एकता कायम करें।"

काशी-तमिल संगमम् : उत्तर और दक्षिण का शानदार सांस्कृतिक संगम

डॉ. एल. मुरुगन
राज्य मंत्री, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय

हमारे देश की विविधता में एकता को प्रदर्शित करने और समुदायों, धर्मों तथा भाषाओं के विविध समूहों के बीच एकजुटता की भावना को प्रज्वलित करने के सामूहिक दृष्टिकोण के साथ, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 31 अक्टूबर, 2015 को 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम की घोषणा की थी। चूँकि विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच सतत् और संरचित सांस्कृतिक सम्बन्धों का विचार प्रधानमंत्री द्वारा प्रस्तुत किया गया था, यह भारत के लोगों के लिए परम पूजनीय था।

भारत एक अनूठा राष्ट्र है, जिसका ताना-बाना विविध भाषायी, सांस्कृतिक और धार्मिक धागों से बुना गया है। इसे सांस्कृतिक विकास के समृद्ध इतिहास द्वारा समग्र राष्ट्रीय पहचान के रूप में सँजोया गया है, जो स्वतंत्रता संग्राम के साथ जुड़ा है और सार्वभौमिक रूप से पोषित मूल्यों के इर्द-गिर्द बनाया गया है।

इस प्रकार 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' विविधता में एकता की भावना की पहचान है। काशी-तमिल संगमम् इसी भावना का प्रतिबिम्ब है। यह महाकवि भरतियार का सपना था और यह हमारे प्रधानमंत्री की भी परिकल्पना है। भारत सरकार ने हज़ारों वर्षों से चली आ रही भारत की सांस्कृतिक एकता का सम्मान करते हुए इसका आयोजन किया। महीने भर चलने वाले इस अनूठे कार्यक्रम का उद्देश्य देश में ज्ञानार्जन के सबसे महत्त्वपूर्ण और प्राचीन दो स्थलों–तमिलनाडु और काशी के बीच वर्षों पुराने सम्बन्धों का उत्सव मनाना, उनकी पुनर्पुष्टि करना और फिर से खोजना है।

तमिलनाडु और काशी के बीच वर्षों से अनूठे सम्बन्ध रहे हैं। दुनिया के सबसे पुराने जीवन्त शहरों में से एक, काशी भारत के सांस्कृतिक लोकाचार का केन्द्र रहा है। तमिलनाडु और तमिल संस्कृति भारत की प्राचीनता और गौरव के केन्द्र हैं। काशी और तमिलनाडु हमारी संस्कृति और सभ्यता के कालजयी केन्द्र रहे हैं। काशी में बाबा विश्वनाथ हैं तो तमिलनाडु में भगवान रामेश्वरम की कृपा है। काशी और तमिलनाडु दोनों ही 'शिवमय' (भगवान शिव की भक्ति में सराबोर) हैं।

काशी और तमिलनाडु के बीच लम्बे समय से ऐतिहासिक और सभ्यतागत सम्बन्ध चले आ रहे हैं। इन दो महान स्थानों के बीच तीर्थयात्रा की एक पुरानी परम्परा है। हमारे समूचे इतिहास में इस मज़बूत बन्धन को आम लोगों के साथ-साथ राजाओं ने भी मज़बूत किया है। इससे जुड़ी प्रसिद्ध कहानियों में से एक मदुरै के राजा पराक्रम पंड्या की है। ऐसा कहा जाता है कि वह भगवान शिव का मंदिर बनाना चाहते थे और इसके लिए शिवलिंग लाने के लिए वह काशी गए थे। लौटते समय वह विश्राम करने के लिए किसी स्थान पर रुके, लेकिन अपनी यात्रा फिर से शुरू करने के लिए जब वह उठे, तो शिवलिंग को ले जाने वाली गाय ने चलने से इन्कार कर दिया। राजा ने इसे भगवान शिव की इच्छा समझ कर शिवलिंग को वहीं स्थापित कर दिया। तब से यह स्थान शिव काशी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। एक और ऐतिहासिक शहर तेनकासी भी काशी-विश्वनाथ मन्दिर के लिए प्रसिद्ध है। भक्तगण यहाँ भगवान शिव की पूजा को वाराणसी के भगवान काशी विश्वनाथ की पूजा के बराबर मानते हैं।

एक राष्ट्र के रूप में; जिसने हज़ारों वर्षों से अपनी सांस्कृतिक विविधता को अपनाया है, उसके लिए यह 'संगमम्' विविधता में एकता, भाषा की बाधाओं को तोड़कर, हमारी साझा विरासत की समझ पैदा करने और दोनों क्षेत्रों के लोगों के बीच सम्बन्धों को गहरा करने का एक उदाहरण है।

प्रधानमंत्री ने 19 नवम्बर, 2022 को इस संगमम् का उद्घाटन किया था और इसका आयोजन शानदार तरीके से किया गया था। चार सप्ताह तक चले इस कार्यक्रम में 2,500 से अधिक प्रतिनिधि काशी का अनुभव लेने के लिए तमिलनाडु से विशेष ट्रेनों से वाराणसी आए थे। इसमें गंगा स्नान, गंगा क्रूज़ और गंगा आरती का आयोजन किया गया था और काशी के साथ तमिलनाडु की ऐतिहासिक तथा शाश्वत निकटता पर प्रकाश डाला गया। सांस्कृतिक सम्बन्धों को बढ़ावा देने के लिए वाराणसी में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के मैदान में तमिल विरासत, व्यंजन और संगीत का प्रदर्शन किया गया। अन्य मंत्रालयों और उत्तर प्रदेश सरकार के सहयोग से शिक्षा मंत्रालय द्वारा आयोजित यह प्रयास ज्ञान की आधुनिक प्रणालियों के साथ भारतीय ज्ञान प्रणाली की सम्पदा को एकीकृत करने पर ज़ोर देने की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप है।

भारत में 'अमृत काल' की शुरुआत के दौरान इस प्रकार का आयोजन भारत की सांस्कृतिक शक्ति और मज़बूती का परिचायक है। इसमें भारत के गौरवशाली भविष्य के लिए भी अनेक अवसर निहित हैं। जैसा कि प्रधानमंत्री ने भी उद्धृत किया है, 'अमृत काल' में, पूरे देश की एकता से हमारे संकल्प पूरे होंगे,' इसी दृष्टिकोण के साथ आगे चलकर ऐसे अनेक संगमम् का आयोजन किया जाएगा। 130 करोड़ भारतीयों की अब यह ज़िम्मेदारी है कि वे अपने देश की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करें और उन सम्बन्धों को बढ़ावा दें, जो वास्तव में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना को प्रदर्शित करते हैं।

हमारे प्रधानमंत्री के शब्दों में, "इस प्रकार के संगमम् के लाभों को अनुसन्धान के माध्यम से आगे बढ़ाने की आवश्यकता है और यह बीज एक विशाल वृक्ष बनना चाहिए।" इसी दृढ़ संकल्प के साथ हम 'अमृत काल' में प्रवेश करते हैं और अपने सपनों के 'नए भारत' के निर्माण की ओर बढ़ते हैं!

काशी-तमिल संगमम् के बारे में डॉ. एल. मुरुगन के विचार जानने के लिए QR कोड स्कैन करें।

काशी-तमिल संगमम् के प्रतिभागियों

के शब्दों में

के. वी. कृष्णन

महाकवि सुब्रमण्यम भारती के 96 वर्षीय भतीजे

"मुझे खुशी है कि मैं काशी में पैदा हुआ और बड़ा हुआ और महान महाकवि सुब्रमण्यम भारतीजी के भतीजे के रूप में काशी में रहा। उनकी आत्मा अवश्य प्रसन्न हुई होगी कि आज काशी-तमिल संगमम् का विचार साकार हुआ, जिसमें दक्षिण भारत से इतने सारे लोग (बच्चे, विद्वान और शैक्षिक समूह) काशी आए जहाँ 30 दिनों के लिए वे इस संगम का हिस्सा बने। मुझे यकीन है कि वह हमें देख रहे होंगे और इस 'संगमम्' के विचार से प्रसन्न होंगे।"

शुभाश्री

काशी-तमिल संगमम् में सबसे युवा उद्यमी

"मैंने बाइक से हिमाचल, कश्मीर आदि कई शहरों की यात्रा की है, लेकिन मुझे कभी काशी जाने का अवसर नहीं मिला। काशी जाने के इस अवसर ने शहर के बारे में मेरा पूरा नज़रिया बदल दिया है। यह बहुत ख़ूबसूरत जगह है। मैं इस शहर के ढेर सारे अद्भुत फोटो ले रही हूँ और लोगों से साझा करुँगी ताकि उन्हें दिखा सकूँ कि काशी कितना शानदार है। प्रबन्धन से लेकर काशी के लोगों के आतिथ्य तक, सब कुछ अनुकरणीय है। मैंने गंगा क्रूज़ की सवारी का अनुभव लिया और विशेष रूप से रात के समय काशी की सुन्दरता को कैद करने का यह एक सही तरीका है। मैं काशी-तमिल संगमम् में अपने अनुभव से वास्तव में रोमांचित हूँ।"

तमिलनाडु के छात्र

"जब से हम काशी के लिए ट्रेन में सवार हुए, तब से यह हमारे लिए एक रोमांचक यात्रा रही। काशी जैसी जगह पर जाना और भारत की एक ऐसी झलक देखना अच्छा है, जो कई मायनों में अविस्मरणीय है। मैं जिस क्रूज़ की सवारी पर गया था, वह मेरे जीवन के सबसे अच्छे अनुभवों में से एक था।"

"एक छात्र के दृष्टिकोण से BHU के उन छात्रों से मिलकर बहुत अच्छा लगा, जिन्हें काशी की सुन्दरता को रोज़ाना देखने का सौभाग्य प्राप्त है।"

"हम तंजावुर से हैं, और हम बनारस के छात्रों से मिले हैं। जैसे कि प्रधानमंत्री ने कल्पना की थी, यहाँ मिलने से हमारे जो कनेक्शन बने हैं, उसके परिणामस्वरूप काशी और तमिलनाडु का सदियों पुराना रिश्ता भी पोषित हो रहा है।"

वाराणसी के छात्र

"हम तमिलनाडु के छात्रों से मिलने के लिए आभारी हैं, क्योंकि हमारे लिए तमिल संस्कृति और तमिलनाडु के लोगों के बारे में जानना एक अद्भुत अनुभव है।"

"इस संगमम् में काशी और तमिल संस्कृति के बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध को दोनों पक्षों के लोगों द्वारा ख़ूबसूरती से बढ़ावा दिया जा रहा है।"

"काशी-तमिल संगमम् की नज़रों से हम काशी की सड़कों पर अतुलनीय भारत देख सकते हैं। और इसके लिए हम प्रधानमंत्री को उनके इस विचार के लिए और काशी को इस सांस्कृतिक आदान-प्रदान का केन्द्र बनाने के लिए धन्यवाद देना चाहते हैं।"

अटल बिहारी वाजपेयी

25 दिसम्बर, 1924 को तत्कालीन ग्वालियर में जन्मे श्री अटल बिहारी वाजपेयी एक ऐसे नेता के रूप में उभरे, जिन्हें अपनी उदार विश्वदृष्टि और लोकतांत्रिक आदर्शों के प्रति प्रतिबद्धता के लिए सम्मान मिला।

राष्ट्रवादी राजनीति के साथ उनका पहला सम्पर्क उनके छात्र जीवन में हुआ, जब वे 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में शामिल हुए। इस आन्दोलन से ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन अन्त की ओर बढ़ा।

राजनीति विज्ञान और कानून के छात्र रहे अटलजी की कॉलेज में ही विदेशी मामलों में गहरी रुचि विकसित हुई। एक ऐसी रुचि जिसका उन्होंने आगे चलकर विभिन्न बहुपक्षीय और द्विपक्षीय मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए कुशल उपयोग किया।

उन्होंने एक पत्रकार के रूप में कार्य शुरू किया। 1951 में पत्रकार की भूमिका छोड़ वे भारतीय जनसंघ, जो कि भारतीय जनता पार्टी की अग्रदूत थी, में शामिल हुए।

भारत के प्रधानमंत्री, विदेश मंत्री, संसद की विभिन्न महत्त्वपूर्ण स्थायी समितियों के अध्यक्ष और विपक्ष के नेता के रूप में वे देश की अंदरूनी और विदेश नीति को आकार देने में सक्रिय भागीदार बने रहे।

वे तीन बार भारत के प्रधानमंत्री रहे। 1996 में पहली बार कुछ समय तक, फिर 1998 में 13 महीनों के लिए और 1999 से 2004 तक वे देश के प्रधानमंत्री रहे। वाजपेयीजी पं. जवाहरलाल नेहरू के बाद पहले प्रधानमंत्री थे जो लगातार दो जनादेशों के साथ भारत के प्रधानमंत्री रहे।

एक प्रसिद्ध नेता, सामाजिक कार्यकर्ता, कवि और साहित्यकार

चार दशकों के अपने कॅरियर में वे नौ बार लोकसभा के लिए और दो बार राज्यसभा के लिए चुने गए, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है।

समीक्षकों द्वारा प्रशंसित कवि अटलजी अपने प्रधानमंत्री के कार्यकाल के दौरान भी संगीत, कविता और कुकिंग के लिए समय निकालते थे।

महिला सशक्तिकरण और सामाजिक समानता के उत्साही चैम्पियन श्री वाजपेयी दूरंदेशी और आगे बढ़ने वाले भारत में विश्वास रखते थे। ऐसा राष्ट्र जो मज़बूत और समृद्ध हो और राष्ट्रों के समुदाय में अपने सही स्थान के प्रति आश्वस्त हो।

वे ऐसे भारत के पक्ष में थे, जो 5000 वर्षों के सभ्यतागत इतिहास से जुड़ा हो, हमेशा आधुनिकीकरण को बढ़ावा देता हो, हमेशा नवीकृत के लिए तत्पर हो, अगले 1000 वर्षों की चुनौतियों का सामना करने के लिए हमेशा ऊर्जावान हो।

राष्ट्र और समाज के प्रति नि:स्वार्थ समर्पण के लिए उन्हें 1992 में पद्म विभूषण और 2015 में भारतरत्न से सम्मानित किया गया था।

2014 से भारतीयों को पारदर्शी, प्रभावी और जवाबदेह शासन प्रदान करने की दिशा में प्रतिबद्धता को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार 25 दिसम्बर को श्री अटल बिहारी वाजपेयी के सम्मान में 'सुशासन दिवस' मनाती है।

सार्वजनिक जीवन में श्री अटल बिहारी वाजपेयी का उदय उनकी राजनीतिक सूझबूझ और भारतीय लोकतंत्र, दोनों के लिए एक सौगात है।

भारतीय पारम्परिक चिकित्सा

साक्ष्य की कसौटी पर खरी उतरती

चिकित्सा की भारतीय पारम्परिक प्रणालियाँ सदियों से प्रसिद्ध वैश्विक पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियों में से हैं और इसने भारत और यहाँ तक कि दुनिया में आबादी के एक बड़े हिस्से को स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

साक्ष्य-आधारित चिकित्सा के आधुनिक युग में भी ये पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियाँ साक्ष्य की कसौटी पर खरी उतर रही हैं।

विभिन्न वैज्ञानिक और शोधकर्ता साक्ष्य-आधारित वैज्ञानिक अध्ययनों के साथ यह उजागर कर रहे हैं कि भारतीय पारम्परिक चिकित्सा क्या चमत्कार कर सकती है। उदाहरण के लिए योग, जिससे देश युगों-युगों से अपनी गौरवपूर्ण विरासत के रूप में लाभ प्राप्त कर रहा है, अब विश्व स्तर पर पहुँच रहा है और साक्ष्य-आधारित परिणामों के लिए आधुनिक युग की कसौटी पर खरा उतर रहा है।

अपने हालिया 'मन की बात' सम्बोधन में, प्रधानमंत्री ने दो ऐसे अध्ययनों पर प्रकाश डाला, जो चिकित्सा विज्ञान में योग के लाभों को प्रमाणित करते हैं:

टाटा मेमोरियल सेंटर द्वारा किया गया अध्ययन स्तन कैंसर रोगियों के लिए योग को प्रभावी सिद्ध करता है

मुम्बई के टाटा मेमोरियल सेंटर में किए गए एक व्यापक शोध में यह बात सामने आई है कि स्तन कैंसर के मरीजों के लिए योग कारगर है।

इस केन्द्र के शोध के अनुसार, योग के नियमित अभ्यास से स्तन कैंसर के रोगियों की पुनरावृत्ति और मृत्यु का जोखिम 15% तक कम हो गया है।

योग को शामिल करने से डिज़ीज़-फ्री सर्वाइवल (DFS) में 15% और ओवरआल सर्वाइवल (OS) में 14% सुधार हुआ।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि स्तन कैंसर से प्रभावित महिलाओं में योग करने से जीवन की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ।

CIMR, AIIMS का अध्ययन सिंकपी रोगियों के लिए योग के लाभों का वर्णन करता है

2016 में भारत की प्राचीन चिकित्सा पद्धतियों के साथ समकालीन चिकित्सा के अभिसरण का अध्ययन करने के लिए एम्स, नई दिल्ली में सेंटर फ़ॉर इंटीग्रेटिव मेडिसिन एंड रिसर्च (CIMR) की स्थापना की गई थी। एम्स के कुल 19 विभाग सेंटर के साथ मिल कर शारीरिक एवं मानसिक रोगों पर योग के प्रभावों को जानने के लिए कार्यरत हैं। उनके शोध के आधार पर लगभग 20 शोध पत्र विभिन्न प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

अमेरिकन कॉलेज ऑफ़ कार्डियोलॉजी के जर्नल में प्रकाशित ऐसा ही एक शोध पत्र सिंकपी से पीड़ित रोगियों पर योग के परिणामों पर प्रकाश डालता है।

12 महीनों में मरीज़ों में प्री-सिंकपी एपिसोड की कम घटनाएँ देखी गईं।

योगाभ्यास के 12 महीनों के भीतर 43.3% रोगी लक्षण-मुक्त थे।

मरीजों ने योग अभ्यास के 12 महीनों के अंदर जीवन की गुणवत्ता में महत्त्वपूर्ण सुधार दिखाया।

योग स्वास्थ्य और कल्याण के लिए सार्वभौमिक आकांक्षा का प्रतीक है। यह शून्य बजट में स्वास्थ्य आश्वासन है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

कैंसर से ठीक हुए लोगों के शब्दों में ...

मेरा 2017 में ब्रेस्ट कैंसर का ऑपरेशन हुआ था। कुछ दिनों बाद मैंने यहाँ योग करना शुरू किया और अब घर पर भी करती हूँ। ऑपरेशन के बाद मुझे थकान महसूस होती थी, लेकिन योग के बाद मुझे काफ़ी आराम मिला। मैं लोगों से कहना चाहता हूँ कि योग करने से हिचकिचाएँ नहीं। इसके कई फ़ायदे हैं और इसे नियमित रूप से करना चाहिए।

अंजलि गायकवाड़

मेरा 2018 में टाटा मेमोरियल अस्पताल में ब्रेस्ट कैंसर का इलाज हुआ था। उसके बाद मेरी कीमोथेरेपी और योगाभ्यास शुरू हुआ। अब मैं घर के सारे काम करती हूँ और घर पर योग भी करती हूँ। मुझे कोई तकलीफ़ या दर्द महसूस नहीं होता।

प्रभा सोलंकी

सिखाने और प्रेरित करने वाली – योगऐनेटमी

डॉ. राजेन्द्र अच्युत बडवे
सर्जिकल कैंसर विशेषज्ञ,
निदेशक, टाटा मेमोरियल सेन्टर

भारत के प्राचीन गहन दर्शन में आरम्भ हुआ आध्यात्मिक अभ्यास, शारीरिक और मानसिक कल्याण को बढ़ावा देने के एक उपाय के रूप में लोकप्रिय हो गया है। योग की ख़ासियत यह है कि आप युवा हों या वृद्ध, मोटे हों या दुरुस्त, इसमें आपका मन शान्त और तन सुदृढ़ करने की अद्भुत शक्ति है। अध्ययनों से पता चला है कि तनाव प्रबन्धन, मानसिक/भावनात्मक स्वास्थ्य, पौष्टिक भोजन/गतिविधि सम्बन्धी आदतों, नींद और सन्तुलन को बढ़ावा देने सहित स्वास्थ्य सम्बन्धी विभिन्न पहलुओं में योग लाभकारी हो सकता है।

वैश्वीकरण के इस युग में जीवन शैली और आहार में भारी बदलाव आ रहा है, इसलिए स्वास्थ्य सम्बन्धी व्यापक और समग्र देखभाल प्रदान करने के लिए विभिन्न भारतीय पारम्परिक विज्ञानों के बीच अन्तर्सम्बन्ध का पता लगा कर इन्हें प्रमाणित करना उचित होगा। टाटा मेमोरियल सेन्टर (TMC), मुम्बई ने पश्चिमी तरीके से चीज़ों का परीक्षण करने के उद्देश्य से योग पर आधारित एक अध्ययन किया। रोगियों को योग को समझने और अभ्यास करने के ऊपरी सोपानों पर ले जाया गया, जो तीन चरणों में किया गया था : श्वास, आसन और आध्यात्मिकता।

स्तन कैंसर पर अध्ययन दो तरह के रोगियों के बीच किया गया। एक, जिन्होंने सर्जरी और रेडिएशन से पहले कीमोथेरेपी और योग सेशन्स में भाग लिया था और दूसरे वे, जिन्होंने सर्जरी के बाद योग और कीमोथेरेपी शुरू की। रोगियों का मूल्यांकन उनकी शारीरिक शक्ति, भावनात्मक स्थिरता, अच्छा महसूस करने, थकान, उनमें

आध्यात्मिक रूप से कोई बदलाव तथा उनके जीवित रहने की अवधि बेहतर होने के आधार पर था। योग विशेषज्ञों और रोगियों की देखभाल करने वालों ने इस प्रक्रिया को इस तरह से तैयार किया है कि इनमें से प्रत्येक चरण को उस समय आसानी से करना सम्भव होगा, जब वे उपचार से गुज़र रहे हों। उपचार के साथ-साथ योग अनुपालन का परिणाम अच्छा रहा। यही नहीं, रोगी अत्यन्त प्रसन्न थे और उनकी जीवन गुणवत्ता में सुधार पाया गया।

प्रधानमंत्री के हाल की 'मन की बात' में TMC के इस प्रयास पर प्रकाश डाला, जिसने अधिक से अधिक लोगों को उपचार के बारे में जागरूक किया है। योग सेशन्स और उपचार का विवरण जल्दी ही टाटा मेमोरियल सेन्टर की वेबसाइट पर मुफ़्त उपलब्ध होगा। इस पहल ने स्कूलों को भी अपने पाठ्यक्रम में योग शामिल करने के लिए प्रोत्साहित किया है।

योग अभ्यास में प्रयास और सरलता के बीच सन्तुलन होना लक्ष्य रहता है, लेकिन अभ्यास के दौरान समग्रता में आप जो महसूस करते हैं, उस पर अधिक ध्यान दिया जाता है और साथ ही यह देखना भी बेहतर होगा कि क्या अभ्यास की तीव्रता कम या अधिक करने की आवश्यकता है या नहीं। योग अभ्यास में प्रयास और सरलता के बीच जितना सन्तुलन बनाएँगे, उतना ही इसका आनन्द लेते हुए योग का लाभ उठाया जा सकता है।

भारतीय परम्पराओं से आन्तरिक शक्ति का उदय

डॉ. गौतम शर्मा
प्रोफ़ेसर इन्चार्ज
सेन्टर फ़ॉर इंटीग्रेटिव मेडिसिन एंड रिसर्च

एक 3,000 साल पुरानी भारतीय परम्परा को अब पश्चिमी दुनिया में स्वास्थ्य के लिए एक होलिस्टिक एप्रोच के रूप में माना जाता है। योग, तन-मन दुरुस्त रखने का ऐसा साधन है, जिसमें माँसपेशियों की गतिविधियों तथा आन्तरिक शक्ति से अपने श्वास और ऊर्जा पर ध्यान एकाग्र करते हुए इन के बीच तालमेल बिठाया जाता है। स्वास्थ्य की ओर एक व्यक्ति की यात्रा में योग सक्रिय भूमिका निभाता है और उस व्यक्ति को हीलिंग प्रोसेस (उपचार प्रक्रिया) में शामिल करता है। उपचार बाहरी स्रोत के बजाय भीतर से आता है और स्वायत्तता की भावना प्रबल होती है।

स्वास्थ्य के प्रति इस होलिस्टिक एप्रोच को सेन्टर फ़ॉर इंटीग्रेटिव मेडिसिन एंड रिसर्च (CIMR) ने अपनाया है, जो AIIMS नई दिल्ली की एक अग्रणी पहल है। हृदय, उच्च रक्तचाप, मधुमेह आदि से सम्बन्धित रोगों में योग को शामिल करने के बारे में निरन्तर किए गए अनुसन्धान और अध्ययनों में आधुनिक जीवन शैली पर सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला है और अब इसके वैज्ञानिक प्रमाण स्थापित करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

योग का उपयोग स्वायत्त तन्त्रिका तन्त्र (ऑटोनोमिक नर्वस सिस्टम) को उत्तेजित करने के लिए किया जा रहा है, जिस पर वेसोवेगल सिंकपी जैसी बीमारियों का असर पड़ने से व्यक्ति हृदय संरचना सम्बन्धी बीमारी ना होने पर भी बेहोश हो जाता है और माइग्रेन सिरदर्द से पीड़ित होता है। यही नहीं, डिप्रेशन और एंग्ज़ायटी जैसे मनोवैज्ञानिक विकारों का भी इसी सन्दर्भ में अध्ययन किया जा रहा है। आम, लेकिन उपेक्षित अवस्थाओं में से एक अनिद्रा का व्यक्ति के स्वास्थ्य पर दीर्घकालिक और गम्भीर प्रभाव पड़ता है। इसके उपचार का एक उपाय आयुर्वेद की पारम्परिक शिरोधारा तकनीक है, जिसके तहत माथे पर औषधीय तेल या अन्य तरल पदार्थ की हल्की धार लगातार टपकाई जाती है।

गर्भावस्था के सम्बन्ध में योग और इसके योगदान पर व्यापक शोध भी देखा जा रहा है, जिससे महिलाओं के स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। आसन और प्राणायाम के माध्यम से उपचार पर सावधानीपूर्वक चर्चा की जाती है और योगासनों का चिकित्सा के रूप में उपयोग करने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए ये विशेष रूप से तैयार किए जाते हैं। हालाँकि यह भी देखने में आया है कि लोग कुछ महीनों के बाद नियमित रूप से अभ्यास करना बंद कर देते हैं। एक बात ध्यान देने की है कि दीर्घकालिक लाभ प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि योग का अभ्यास नियमपूर्वक और पूरी निष्ठा से किया जाए।

योग का उद्देश्य मनुष्य के शारीरिक, महत्त्वपूर्ण, मानसिक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक पहलुओं के बीच सामंजस्य पैदा करना है। योगाभ्यास करने वाले लोग विभिन्न प्रकार के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य लाभों का आनन्द ले सकते हैं। उदाहरण के लिए व्यायाम उनकी ब्लड शुगर और ब्लड प्रेशर कम कर सकता है और उन्हें आन्तरिक शान्ति प्राप्त करने में भी सक्षम बनाता है। इसलिए जब लगातार और सावधानी से अभ्यास किया जाता है, तो योग व्यक्ति के शरीर और आत्मा, दोनों पर अनुकूल प्रभाव डालता है। इसीलिए कहा गया है कि लोगों को अपनी जीवन शैली सुधारनी हो तो इन तकनीकों का उपयोग करें।

डॉ. गौतम शर्मा द्वारा जानिए योग के मानसिक और शारीरिक प्रभाव, QR कोड स्कैन करें।

9वीं विश्व आयुर्वेद कांग्रेस

"आयुर्वेद एक विज्ञान है, जिसका ध्येय वाक्य है— 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः' अर्थात 'सब सुखी हों, सब रोगमुक्त हों'। दुनिया जीवन के इस प्राचीन तत्वज्ञान की ओर लौट रही है और मुझे बहुत खुशी है कि भारत ने इस पर बहुत पहले काम करना शुरू कर दिया था।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

विवरण

विश्व आयुर्वेद कांग्रेस (WAC) का 9वाँ संस्करण 8 दिसम्बर, 2022 से 11 दिसम्बर, 2022 को गोवा में आयोजित किया गया, जिसका विषय था 'आयुर्वेद फॉर वन हेल्थ'। आयुर्वेदिक चिकित्सकों, दवा निर्माताओं और शिक्षाविदों को जोड़ने के लिए एक मंच से अधिक, WAC प्रतिक्रिया एकत्र करने, प्रगति को मॉनिटर करने और तदनुसार मिशन शुरू करने के लिए भी जाना जाता है।

वन हेल्थ

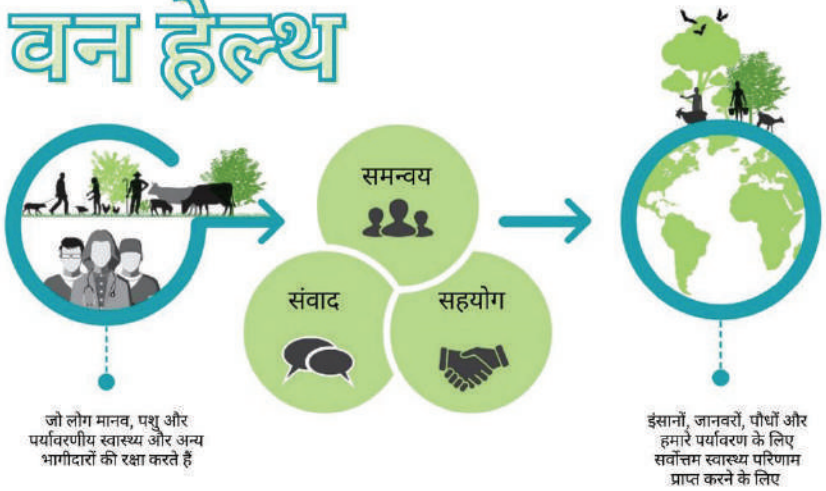

9वें WAC की मुख्य हाइलाइट्स

कार्यक्रम में छात्रों और आयुर्वेद के क्षेत्र से जुड़े विभिन्न हितधारकों को मिला कर 50 देशों के कुल 400 से अधिक डेलीगेट्स की सक्रिय भागीदारी देखी गई।

अनुसन्धान और अन्तरराष्ट्रीय सहयोग को और मज़बूत करने और लोगों के लिए सस्ती आयुष सेवाओं की सुविधा प्राप्त करने के लिए प्रधानमंत्री ने 3 राष्ट्रीय संस्थानों: अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, गोवा, राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान, ग़ाज़ियाबाद और राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान, दिल्ली का उद्घाटन किया।

औषधीय पौधों के संरक्षण, आयुर्वेद के दायरे का विस्तार, पशु आयुर्वेद जैसे विषयों पर सेमिनार आयोजित किए गए।

आयुर्वेद में स्टार्ट-अप संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए आयुर्वेद में इनोवेशन इकोसिस्टम के विकास पर कार्यशाला आयोजित की गई।

"9वीं विश्व आयुर्वेद कांग्रेस आयुर्वेद विज्ञान पर चर्चा के लिए दुनिया के सबसे बड़े मंच के रूप में उभरी है। *WAC* के विभिन्न कार्यक्रमों में शिक्षा विज्ञान, पशु आयुर्वेद, लोक वनस्पति विज्ञान के पारम्परिक नायकों जैसे कई अन्य विषयों को शामिल किया गया। यह अन्तरराष्ट्रीय प्रतिनिधियों के एक साथ आने और अपने विचारों पर चर्चा करने का एक मंच भी बना। इस कार्यक्रम में न केवल भारत से, बल्कि *37* देशों से भी आयुर्वेद के लगभग *131* छात्रों ने भाग लिया। हम आयुर्वेद के क्षेत्र में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को हमेशा प्रेरणा के स्रोत के रूप में देखते हैं। हम यह सुनिश्चित करते हैं कि पारम्परिक चिकित्सा के रूप में जो हमारी विरासत है, उसका आधुनिक विज्ञान में सही तरह से अनुवाद किया जा सके। आज न सिर्फ भारत में, बल्कि पूरे विश्व में आयुर्वेद पर बड़ी संख्या में अनुसन्धान हो रहे हैं। आयुर्वेद का यह नया युग हमारे पारम्परिक ज्ञान और बुनियादी सिद्धान्तों का वैश्वीकरण कर रहा है।"

-रंजीत पुराणिक
एमडी और सीईओ, श्री धूतपापेश्वर लिमिटेड

विश्व आयुर्वेद कांग्रेस के संचालन समिति के सदस्य, रंजीत पुराणिक ने की प्रधानमंत्री के आयुर्वेद को बढ़ावा देने के प्रयासों की प्रशंसा की। सुनने के लिए *QR* कोड स्कैन करें।

नमामि गंगे

गंगा का पुनर्जीवन

नमामि गंगे कार्यक्रम की शुरुआत 2014 में प्रधानमंत्री द्वारा की गई। उद्देश्य था — 'अविरल धारा', 'निर्मल धारा', भूवैज्ञानिक और पारिस्थितिक अखण्डता सुनिश्चित करने के सन्दर्भ में नदी की पूर्णता को बहाल करके गंगा का कायाकल्प।

उठाए गए कदम

पिछले 8 वर्षों में गंगा की सफ़ाई और कायाकल्प के लिए विविध कदम उठाए गए, जैसे जल अपशिष्ट उपचार, ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन, रिवर-फ्रंट प्रबन्धन, निरन्तर प्रवाह बनाए रखना, ग्रामीण स्वच्छता, वनीकरण, जैव विविधता संरक्षण, आदि।

जन आन्दोलन

हर उस राज्य, जहाँ से गंगा बहती है, वहाँ के स्थानीय लोगों, गंगा प्रहरियों और गंगा दूतों ने जन भागीदारी के माध्यम से वृक्षारोपण, गंगा आरती, घाटों की सफ़ाई आदि के माध्यम से जागरूकता फ़ैलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

प्रभाव

इस जन आन्दोलन का ही परिणाम है कि आज यहाँ हिलसा मछली, गंगा रिवर डॉल्फ़िन और कछुओं की विभिन्न प्रजातियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। गंगा के क्लीन इकोसिस्टम के साथ आजीविका के अन्य अवसर बढ़ रहे हैं।

पहचान

दिसम्बर, 2022 में संयुक्त राष्ट्र ने नमामि गंगे को प्राकृतिक दुनिया को पुनर्जीवित करने के लिए शीर्ष 10 वर्ल्ड रेस्टोरेशन फ्लैगशिप्स में से एक के रूप में मान्यता दी।

सोमगो पोखरी संरक्षण समिति

सोमगो झील के संरक्षण के लिए एक जन आन्दोलन

"जब हमारे संकल्प की शक्ति मज़बूत होती है तो बड़ी-से-बड़ी चुनौती भी आसान हो जाती है। इसकी मिसाल पेश की है सिक्किम के थेगू गाँव के सांगे शेरपा जी ने।"

~ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

सोमगो झील

पूर्वी सिक्किम में 12,310 फ़ीट की ऊँचाई पर स्थित सोमगो झील एक ग्लेशियर झील है, जो वनस्पतियों और जीवों से समृद्ध है।

प्रवासी पक्षियों के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव है।

सिक्किम में सोमगो झील को पवित्र माना जाता है और इसकी पूजा की जाती है।

प्रत्येक वर्ष 4 लाख से अधिक पर्यटकों के आगमन के साथ यह सिक्किम के सबसे प्रसिद्ध पर्यटक स्थलों में से एक है।

सोमगो पोखरी संरक्षण समिति (TPSS)

सिक्किम सरकार द्वारा 2008 में वन, पर्यावरण और वन्यजीव प्रबन्धन विभाग द्वारा अधिसूचित झील संरक्षण दिशानिर्देशों के तहत स्थापित एक समिति है, जो सोमगो झील के संरक्षण में कार्यरत है।

TPSS की गतिविधियाँ

पर्यावरण के मुद्दों के बारे में समुदाय को संवेदनशील बनाने के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम

स्वच्छता अभियान और वृक्षारोपण

विश्व पर्यावरण दिवस, विश्व जल दिवस आदि जैसे महत्त्वपूर्ण दिनों का उत्सव मनाना

"इसके गठन के बाद से TPSS का प्रमुख ध्यान NGOs और राज्य सरकार के समर्थन से वेटलैंड के प्रबन्धन और संरक्षण के लिए सामुदायिक भागीदारी को बढ़ाने पर रहा है। शुरुआत में हमें लोगों को साथ लाने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, लेकिन आज 3 गाँवों के लगभग 265 परिवार इस आन्दोलन का हिस्सा हैं। हमें युवाओं और ग्राम पंचायतों का समर्थन मिल रहा है। हम इस झील को संरक्षित करने के लिए काम कर रहे हैं, क्योंकि यह हमारे लिए पवित्र है और स्थानीय लोगों के लिए रोज़गार पैदा करती है।"

~श्री सांगे शेरपा,
सचिव, TPSS

सूचना और प्रसारण मंत्रालय
स्वच्छ भारत के माध्यम से ज़मीनी बदलाव

सत्यमेव जयते
Ministry of Information and Broadcasting
Government of India

प्रधानमंत्री के विज़न से प्रेरित सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने कार्यस्थल पर स्वच्छ भारत को बढ़ावा देने के लिए कई पहलों द्वारा अन्य मंत्रालयों के लिए एक उदाहरण स्थापित किया है।

माननीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री, अनुराग सिंह ठाकुर के नेतृत्व में भारत के प्रत्येक क्षेत्र में मंत्रालय के विभिन्न कार्यालयों के अधिकारियों और कर्मचारियों ने स्वच्छता अभियान में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया और इसे एक जनान्दोलन में बदल दिया।

मंत्रालय की उपलब्धियाँ

4,500 क्विंटल से अधिक कबाड़ व अन्य सामग्री का निस्तारण किया

3,500 स्थानों पर सफाई और निपटान (इनडोर और आउटडोर)

336 आउटडोर स्वच्छता अभियान स्थल

1,10,000 से अधिक भौतिक और ई-फाइलों की समीक्षा की

3,70,00,000 रुपये का राजस्व अर्जित किया

स्वच्छ भारत के माध्यम से जगह का बेहतर इस्तेमाल

सूचना और प्रसारण मंत्री के अपार उत्साह और मार्गदर्शन से प्रेरित होकर मंत्रालय के विभिन्न कार्यालयों ने स्पेस ऑडिट की शुरुआत की और 10,00,000 वर्ग फुट से अधिक का खाली स्थान अर्जित किया, जिसमें कार्यालय स्थान और आवासीय स्थान, दोनों शामिल हैं।

यह खाली स्थान आज मंत्रालय के तहत उन कार्यालयों द्वारा उपयोग किया जा रहा है, जो पहले किराए के भवनों में कार्यरत थे। इसके परिणामस्वरूप मंत्रालय को प्रति वर्ष 6 करोड़ से अधिक किराए की बचत हुई है।

जागरूकता बढ़ाने के लिए उठाए गए अन्य कदम

- **स्वच्छता की थीम पर आधारित 17 फिल्मों की स्क्रीनिंग**
- **साफ़-सुथरे स्थलों की पहले और बाद की तस्वीरों की फोटो प्रदर्शनी**
- **उत्कृष्ट उपलब्धियों को फ़िल्माया गया और इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया के माध्यम से दिखाया गया**

स्वच्छ भारत 2.0 : सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने पेश की स्वच्छता की मिसाल

"हमारा कर्त्तव्य है कि गन्दगी को दूर करके भारत माता की सेवा करें। मैं शपथ लेता/लेती हूँ कि मैं स्वयं स्वच्छता के प्रति सजग रहूँगा/रहूँगी और उसके लिए समय दूँगा/दूँगी। सबसे पहले मैं स्वच्छता की स्वयं से, मेरे परिवार से, मेरे मुहल्ले से, मेरे गाँव से एवं मेरे कार्य स्थल से शुरुआत करूँगा/करुँगी।"

स्वच्छता संकल्प के इन चंद शब्दों के साथ 2014 में देश ने एकजुट हो स्वच्छता की ओर एक कदम बढ़ाया। आज 8 साल बाद 'स्वच्छ भारत मिशन' हर भारतीय के मन में मज़बूती से जड़ें जमा चुका है। 2014 में शुरू होते ही इस जनान्दोलन को सफल बनाने के लिए सरकार और नागरिकों ने कई अनूठे प्रयास किए हैं।

अपने हालिया 'मन की बात' में प्रधानमंत्री ने स्वच्छ भारत की भावना को मज़बूत करने के लिए सरकार द्वारा किए गए निरन्तर प्रयासों के बारे में बात की। उन्होंने बताया के कैसे मुम्बई, कोलकाता, अहमदाबाद आदि जैसे अपने विभिन्न कार्यालयों में स्वच्छता सुनिश्चित कर सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने न केवल खाली स्थान अर्जित किया, बल्कि किराए के भुगतान की एक बड़ी राशि को भी बचाया और राजस्व अर्जित किया है।

दूरदर्शन टीम के साथ एक साक्षात्कार में डीडी मुम्बई की कार्यालय प्रमुख सुश्री शिप्रा मनस्विता ने मुम्बई कार्यालय द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों पर प्रकाश डाला।

"2 अक्टूबर, 2022 को भारत सरकार ने स्वच्छ भारत अभियान 2.0 की शुरुआत की। इसे सफल बनाने के लिए डीडी मुम्बई कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक अभियान में हिस्सा लिया और पूरे परिसर की सफ़ाई की। सभी ने अपने-अपने कार्यालयों में अवांछित सामग्री की पहचान की और उन्हें डिस्पोज़ किया। छँटाई की प्रक्रिया के दौरान हमने पुरानी फ़ाइलों की पहचान की और उन्हें श्रेड करके नष्ट कर दिया। हमने उन पुराने उपकरणों को नीलाम किया जो अब उपयोग में नहीं थे। इस नीलामी से हमें करीब 22 लाख रुपए की कमाई हुई। डिजिटाइज़ेशन के महत्त्व को समझते हुए हमने 100 से ज़्यादा सर्विस बुक्स की पहचान की और उन्हें डिजिटाइज़ किया।

सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर के नेतृत्व में हमने अपने कार्यालयों में स्पेस ऑडिट किया। इस प्रक्रिया के दौरान हमने कार्यालय को व्यवस्थित किया और एक मूल्यवान खाली स्थान प्राप्त किया, जिसका अब बेहतर तरीके से उपयोग किया जा सकता है।

प्रधानमंत्री ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में मंत्रालय के मुम्बई कार्यालय द्वारा किए गए प्रयासों का उल्लेख किया, जिसके लिए हम उनके बहुत आभारी हैं।"

QR कोड स्कैन करें और जाने कैसे डीडी मुम्बई ने स्वच्छ भारत की भावना का प्रतीक बनकर एक मिसाल कायम की।

स्वच्छ भारत की सच्ची भावना का उदाहरण बना सूचना और प्रसारण मंत्रालय

गौरव द्विवेदी
सीईओ, प्रसार भारती

आधुनिक भारतीय इतिहास के सबसे स्मरणीय दिवसों में से एक, 15 अगस्त, 2014 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लाल क़िले की प्राचीर से 'स्वच्छ भारत अभियान' का आरम्भ कर एक अभूतपूर्व शुरुआत की थी। इतने महत्त्वपूर्ण मंच से पहले कभी इस तरह के नाज़ुक मुद्दे को नहीं उठाया गया था। कई लोगों ने इस पहल को मामूली बताया, परन्तु स्वातंत्र्योत्तर भारत में यह आमजन द्वारा चलाए जाने वाले सबसे महत्त्वपूर्ण अभियानों में से एक साबित हुआ है।

सर्वसाधारण पुरुष एवं स्त्रियाँ, समुदाय, निजी संगठन एवं सरकारी विभाग आदि सभी इस अभियान में बराबर के भागीदार रहे हैं। इन प्रयासों के नतीजे आज हमें व्यावहारिक परिवर्तनों, आत्म-निरीक्षण, आदर्श शहरों, दिल्ली मैट्रो जैसे स्वच्छ सार्वजनिक यातायात तथा और भी कई स्थानों पर देखने को मिल रहे हैं। अनेक कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री मोदी इन प्रयासों की तारीफ़ भी कर चुके हैं।

दिसम्बर, 2022 में अपने 'मन की बात' कार्यक्रम के मासिक संस्करण में प्रधानमंत्री ने सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अन्तर्गत विभिन्न इकाइयों के मिले-जुले प्रयासों की तारीफ़ की थी। जैसे 'कचरा हटाने, गैरज़रूरी वस्तुओं को नीलाम करने से दफ़्तरों में काफ़ी नया स्थान बना है। पहले, स्थानाभाव के ही कारण, कार्यालयों के लिए दूर-दराज़ स्थान किराए पर लेना पड़ता था। वहीं आजकल स्वच्छता के कारण, इतना स्थान उपलब्ध हुआ है कि सभी कार्यालयों को एक ही स्थान में जोड़ा जा रहा है। अतीत में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने मुम्बई, अहमदाबाद, कोलकाता, शिलांग एवं कई अन्य शहरों के अपने दफ़्तरों में कई नए प्रयास किए और इस कारण आज उसके पास नवीन इस्तेमाल के लिए दो या तीन मंज़िलें उपलब्ध हैं। इसी स्वच्छता के कारण, हम अपने स्रोतों का अधिकतम इस्तेमाल करने का श्रेष्ठतम अनुभव प्राप्त कर रहे हैं। समाज में भी गाँव-गाँव, शहर-शहर में भी, उसी प्रकार से दफ्तरों में भी, ये अभियान, देश के लिए भी हर प्रकार से उपयोगी सिद्ध हो रहा है।"

सूचना एवं प्रसारण मंत्री, अनुराग सिंह ठाकुर की अगुवाई में मंत्रालय की विभिन्न इकाइयों ने दो पहल की हैं। एक तो व्यर्थ वस्तुओं से धन उपजाना और दूसरे स्थान का अधिकतम इस्तेमाल।

प्रधानमंत्री द्वारा व्यर्थ वस्तुओं से धन उपजाने के आह्वान को देखते हुए, देश भर में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा एक व्यापक स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया था। व्यर्थ वस्तुओं के सुचारू प्रबन्धन एवं निष्कासन के माध्यम से केवल अकेले प्रसार भारती को ही 20 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ है।

दूसरी पहल के अन्तर्गत अनेक शहरों में प्रसार भारती के परिसरों एवं मंत्रालय की अन्य इकाइयों में भी ऐसे ही स्थान परीक्षण किए गए थे। इसके आधार पर प्रसार भारती ने 8 लाख वर्ग फ़ीट स्थान खाली कराया है। अकेले मुम्बई में ही प्रसार भारती ने 31,000 वर्ग फ़ीट से अधिक स्थान खाली कराया है। मुम्बई के ऑल इंडिया रेडियो में 10 मंज़िलों वाले 2 ब्लॉक्स में, 3 मंज़िलें खाली कराई गई हैं और मुम्बई के डीडी परिसर में, 11 मंज़िलों में से 3 मंज़िलें खाली कराई जा रही हैं। यह समूचे फ़्लोर क्षेत्र कुल 24,000 वर्ग फ़ीट से भी अधिक है।

मौजूदा अवसंरचनात्मक ढाँचे के सुचारू इस्तेमाल के लिए, निजी इमारतों में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की विभिन्न इकाइयों के दफ़्तरों को खाली करा के, प्रसार भारती के खाली होने वाले स्थानों में भेजा जा रहा है, वहीं बाकी बचे खाली स्थान को भूमि इस्तेमाल अधिकारों के अनुसार बेहतर तरीके से उपयोग में लाया जा सकता है।

स्वच्छ भारत की भावना का प्रतीक बन सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने सरकारी एवं निजी कार्यालयों के सामने एक उदाहरण रखा है कि किस तरह स्वच्छता की ओर एक छोटा कदम न केवल स्वच्छ भारत के सपने को साकार कर सकता है, बल्कि आत्मनिर्भर भारत बनने की दिशा में राजस्व उपजाने में भी उपयोगी साबित हो सकता है और इसी आधार पर राष्ट्र 'अमृत काल' की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

भारत की अमूल्य धरोहर
'नए भारत' की आधार शिला

"हमारे देश में अपनी कला-संस्कृति को लेकर एक नई जागरूकता आ रही है, एक नई चेतना जागृत हो रही है। अपनी कला-संस्कृति के प्रति देशवासियों का ये उत्साह 'अपनी विरासत पर गर्व' की भावना का ही प्रकटीकरण है। हमारे देश में तो हर कोने में ऐसे कितने ही रंग बिखरे हैं। हमें भी उन्हें सजाने-सँवारने और संरक्षित करने के लिए निरन्तर काम करना चाहिए।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' के सम्बोधन में)

"हमारे लोक कला और शिल्प क्षेत्रों, अनुदान और सामाजिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए द्वीपवासियों के बीच चल रहे प्रयासों की प्रधानमंत्री द्वारा की गए सराहना से बहुत खुश हैं। हम सम्मानित महसूस कर रहे हैं कि उन्होंने 'मन की बात' कार्यक्रम में हमारे सामुदायिक प्रयासों को शामिल किया।"

-फ़िरोज़ खान
अध्यक्ष, कुमेल ब्रदर्स चैलेंजर्स क्लब

15 अगस्त, 2022 को भारत की आज़ादी के 75 साल पूरे होने के मौके पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लाल किले की प्राचीर से देश को सम्बोधित करते हुए देश को 'अमृत काल' में प्रवेश कराया। 'अमृत काल', अर्थात अगले 25 साल, 2047 तक जब देश औपनिवेशिक शासन से मुक्त होने के 100 साल पूर्ण होने का जश्न मनाएगा। परिवर्तन और विकास के नए युग के विज़न के साथ प्रधानमंत्री ने 'पंच प्रण' का ऐलान किया – वो पाँच प्रतिज्ञाएँ, जो प्रत्येक नागरिक को हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों के भारत का निर्माण करने के लिए अवश्य लेनी चाहिए।

सदी के अगले पच्चीस वर्षों के लिए प्रधानमंत्री की व्यापक परिकल्पनाओं में से एक हमारी विरासत पर गर्व करना है। निस्संदेह हमारी जड़ों में ही हमारी सबसे बड़ी ताकत निहित है। भारत के अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी की ओर अग्रसर होने के साथ देश के लिए नई ऊँचाइयों को छूने में भारत के युवा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। देश की विविध परम्पराओं, रीति-रिवाज़ों और सांस्कृतिक विरासत की स्वीकृति और सराहना न केवल गर्व पैदा करेगी, बल्कि युवा पीढ़ी को भारत के नागरिकों के रूप में मिली समृद्ध विरासत से भी अवगत कराएगी, क्योंकि यही विरासत है, जिसने भारत को अपना स्वर्णिम अतीत दिया है और यह ही 'न्यू इंडिया' के निर्माण की नींव बनेगी।

"जब हम अपनी धरती से जुड़ेंगे, तभी तो ऊँचा उड़ेंगे और जब हम ऊँचा उड़ेंगे तो हम विश्व को भी समाधान दे पाएँगे।" प्रधानमंत्री समाज की सामूहिक सम्पदा – कला, साहित्य और संस्कृति की शक्ति को भली-भाँति पहचानते हैं और उन्होंने अपने मासिक सम्बोधन 'मन की बात' के माध्यम से इस समृद्ध विरासत को देश के कोने-कोने में पहुँचाकर इस ज्ञान को साझा करने का दायित्व अपने ऊपर लिया है।

'वोकल फ़ॉर लोकल' और 'आत्मनिर्भर भारत' के चैम्पियन, प्रधानमंत्री स्थानीय उत्पादों, परम्पराओं, कला, शिल्प तथा संस्कृति-सम्बन्धी कार्यकलापों और उनके संरक्षण में शामिल स्थानीय लोगों को उजागर करने से कभी नहीं चूकते। चाहे कर्नाटक और उत्तर प्रदेश का खिलौना निर्माण हो, महाराष्ट्र और नगालैंड का बाँस का काम हो, असम के चमड़े के उत्पाद हों, खादी हो, जूट, कपास तथा केले के रेशे से बने बैग हों, या देश भर में तैयार किए जाने वाले पारम्परिक वाद्य यंत्र – कला और शिल्प के ऐसे कई स्थानीय रूप हैं, जिन्हें प्रधानमंत्री ने प्रोत्साहन दिया है। मिंजर मेला, माधवपुर मेला, मरीदम्मा मेला और मावली मेला जैसे मेले, जो आधुनिक समय में हमें अपने गौरवशाली अतीत और परम्पराओं से

जोड़ने का काम करते हैं और 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को मज़बूत करते हैं, प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' में उनका भी उल्लेख किया है।

सरकार की कई नीतियाँ और पहल इस बात का प्रमाण हैं कि सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि माननीय प्रधानमंत्री की परिकल्पना वास्तविकता में परिवर्तित हो। अमृत सरोवर, LiFE और स्वच्छ भारत अभियान जैसे मिशन, पारम्परिक औषधियों के लिए AYUSH मार्क की शुरुआत, COVID-19 रोगियों

"प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी ने अपने 'मन की बात' में हमारे स्टार्टअप के बारे में बात की। यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई कि मेरा स्टार्टअप बहुत छोटा होने के बावजूद प्रधानमंत्री ने हमें पहचाना और उन्होंने अपने मासिक सम्बोधन में हमारे उत्पादों और स्टार्टअप के बारे में बात की। यह मेरे लिए सबसे बड़ा इनाम है।"

-सुरेश

सह-संस्थापक, भूमि एग्री वेंचर्स

और मानसिक स्वास्थ्य के लिए योग गाइडलाइन्स का प्रसार, स्वदेशी खेलों (गतका, कलरीपायट्टु, थांग-टा. और मल्लखम्ब) का 'खेलो इंडिया' में शामिल होना – ये सब हमारे देश की सदियों पुरानी परम्पराओं से प्रेरणा लेते हैं और साथ ही उन परम्पराओं में अपना विश्वास सिद्ध करते हैं। खादी को बढ़ावा देने हेतु खादी ग्रामोद्योग आयोग के फ़ोकस को 'प्रशासन' से 'बिक्री' पर स्थानांतरित किया गया है। खादी को पुनः प्रचलित करने तथा इसके उत्पादन में वृद्धि के लिए खादी सुधार और विकास कार्यक्रम की योजना का आरम्भ; स्वदेशी कारीगरों तथा शिल्पकारों को मंच देने के लिए 'हुनर हाट' का आयोजन; टॉयकथॉन, खिलौने (गुणवत्ता नियन्त्रण) आदेश का कार्यान्वयन, SFURTI के माध्यम से देश भर में टॉय क्लस्टर्स की स्थापना की गई। सरकार भारत की स्वदेशी पारम्परिक विरासत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के साथ-साथ रोज़गार

के अवसर प्रदान करने के लिए दृढ़ संकल्पित है।

योग और आयुर्वेद से लेकर मधुमक्खी पालन, जल संरक्षण, हमारी प्राचीन ज्ञान प्रणालियाँ, अहिंसा तथा बहुलवाद, विविधता, सहिष्णुता और लोकतंत्र की हमारी अवधारणा के कारण दुनिया भारत के पारम्परिक ज्ञान में एक सस्टेनेबल और न्यायपूर्ण भविष्य के संकेतों की तलाश कर रही है। हमारी विरासत और संस्कृति के प्रति बढ़ते विश्वास और गौरव ने भारत को विश्व मानचित्र पर पहले से कहीं अधिक महान बना दिया है। आज जब दुनिया सम्पूर्ण स्वास्थ्य की बात करती है तो वह भारत के योग और आयुर्वेद की ओर देखती है। जब दुनिया पर्यावरण से सम्बन्धित समस्याओं का सामना कर रही है, तब स्वच्छता और सस्टेनेबिलिटी के हमारे संस्कार प्रेरणा का स्रोत बन गए हैं। देश से मिलेट्स के निर्यात में वृद्धि हुई है और दुनिया भर में लोग स्वस्थ जीवन शैली के लिए इसे अपना रहे हैं। अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस, मिशन LiFE और अन्तरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष ऐसे चंद उदाहरण हैं, जो साबित करते हैं कि हमारी विरासत को पूरी दुनिया में सराहा जा रहा है।

किसी फैली हुई शाखाओं वाले फलते-फूलते पेड़ की जड़ें जिस प्रकार मज़बूती से जमी होनी चाहिए, उसी तरह भारत के लोगों में अपनी सांस्कृतिक और पारम्परिक जड़ों की गहन पहचान और स्वीकृति अवश्य होनी चाहिए। भारत दुनिया के सबसे विविध राष्ट्रों में से एक है, जिसे एक विशिष्ट और अनूठी विरासत का आशीर्वाद प्राप्त है। कला, साहित्य और संस्कृति समाज की सामूहिक पूँजी है और इसे आगे बढ़ाना हम सबका सामूहिक दायित्व है। किसी राष्ट्र की प्रगति उसके इतिहास और विरासत के ज्ञान से पैदा हुए गौरव में निहित विश्वास से आती है। अतीत का अवलोकन वर्तमान और भविष्य की तैयारी की प्रेरणा का मज़बूत आधार बन सकता है।

भारतीय विरासत

माधवपुर मेला

'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का एक अद्भुत उदाहरण, गुजरात का माधवपुर मेला देश के पश्चिमी और पूर्वी छोरों को जोड़ता है। माधवपुर में ही भगवान कृष्ण और अरुणाचल प्रदेश की इदु मिश्मी जनजाति की राजकुमारी रुक्मिणी का विवाह हुआ था और यह मेला इस पवित्र मिलन का जश्न मनाता है।

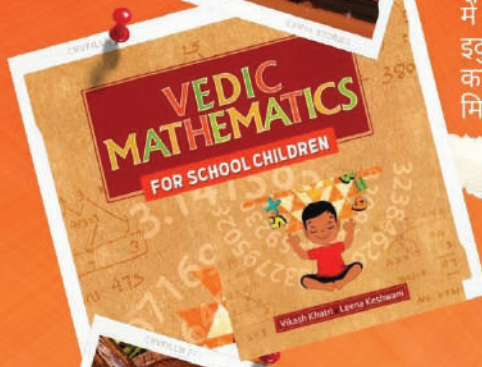

वैदिक गणित

वैदिक गणित न्यूमेरिकल कैलकुलेशन्स को जल्दी और तेज़ी से हल करने के लिए सूत्रों का एक संग्रह है। गणित की यह प्राचीन प्रणाली सरल नियमों पर आधारित गणनाओं की एक अनूठी तकनीक का उपयोग करती है, जिससे गणित की समस्याओं की एक पूरी श्रृंखला को आसानी से हल किया जा सकता है।

योग और आयुष

चिकित्सा की भारतीय प्रणालियाँ सहस्राब्दी पुरानी और कल्याणकारी हैं। पिछले कुछ वर्षों में स्वास्थ्य प्रतिमान में परिवर्तन के कारण आयुष प्रणालियों में रुचि का अभूतपूर्व पुनरुत्थान हुआ है। चिकित्सा और समग्र स्वास्थ्य की इन पारम्परिक भारतीय प्रणालियों को अंतरराष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति में मान्यता मिल रही है और दुनिया भर में स्वीकृति प्राप्त हुई है। कोरोना वायरस के ख़िलाफ़ विश्व स्तर पर योग और आयुष ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

थांग-टा

थांग-टा (तलवार और भाले की कला) प्राचीन मणिपुरी मार्शल आर्ट के लिए एक लोकप्रिय शब्द है, जिसे हुएन लाल्लोंग के नाम से जाना जाता है। मणिपुर के मैतेई लोगों के बीच उत्पन्न हुई कला तत्कालीन साम्राज्य में युद्ध के माहौल से विकसित हुई।

'मन की बात' रिवाइंड

जगन्नाथ रथ यात्रा

जगन्नाथ रथ यात्रा भगवान जगन्नाथ की अपने भाई-बहनों, देवी सुभद्रा और भगवान बलभद्र के साथ रानी गुंडिचा के मन्दिर में यात्रा का जश्न मनाती है। इस त्योहार का केन्द्र ओडिशा में जगन्नाथ पुरी मन्दिर है, जो चार प्रमुख हिन्दू मन्दिरों में से एक है।

मधुमक्खी पालन

मधुमक्खी पालन एक सस्टेनेबल और पर्यावरण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण गतिविधि है। एक कला और आकर्षक विज्ञान के रूप में मधुमक्खी पालन भारत में सबसे पुरानी प्रथाओं में से एक है, जो रोज़गार और आय प्रदान करने के साथ-साथ पोषण, आर्थिक, और पारिस्थितिक सन्तुलन प्रदान करती है।

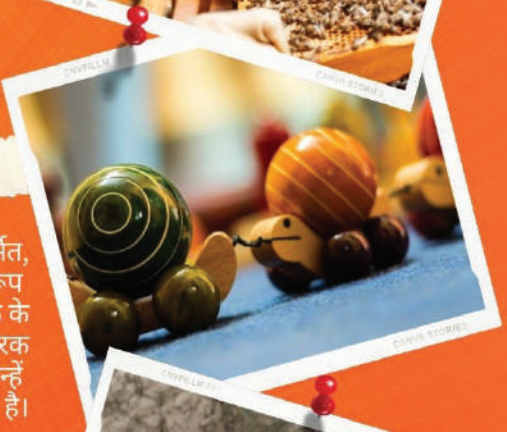

चन्नापटना के खिलौने

कर्नाटक के टॉय सिटी रामनगर में निर्मित, चन्नापटना के खिलौने पारम्परिक रूप से आइवरी वुड से बनाए जाते हैं। प्लास्टिक के खिलौनों के विपरीत ये खिलौने हानिकारक नहीं होते, क्योंकि इन्हें वनस्पति रंगों से रँगा जाता है।

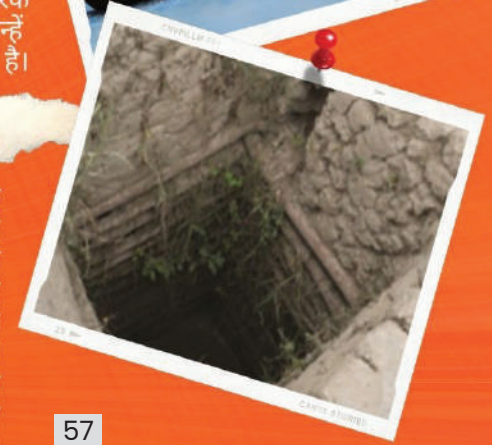

वृदास

जल संरक्षण की यह पारम्परिक विधि कच्छ के रण की खानाबदोश मालधारी जनजाति द्वारा अपनाई जाती है। एक प्राकृतिक पूल बनाने के लिए रेत में उथले कुएँ खोदे जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप वर्षा का पानी रिसता है और समय के साथ इकट्ठा होता है। मालधारी जनजाति के लोग इन तालों की सुरक्षा के लिए इनके आस-पास पेड़-पौधे भी लगाते हैं।

अपनी पारम्परिक सम्पदा को आगे बढ़ाते लक्षद्वीप के युवा

हाल के 'मन की बात' में प्रधानमंत्री ने लोगों और समुदायों द्वारा अपनी सदियों पुरानी विरासत, जो समय के साथ खो रहे हैं, को बचाने के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। ऐसा ही एक सफल प्रयास लक्षद्वीप में किया जा रहा है। कल्पेनी द्वीप पर एक क्लब, कुमेल ब्रदर्स चैलेंजर्स क्लब, स्थानीय संस्कृति और पारम्परिक कलाओं को संरक्षित करने के लिए द्वीप के युवाओं को प्रेरित कर रहा है। क्लब ने युवाओं को कोलकली, परीचाकली, किलिप्पाट्ट और पारम्परिक गीतों की स्थानीय कला में प्रशिक्षित करने की ज़िम्मेदारी ली है।

*हमारी दूरदर्शन टीम ने क्लब के अध्यक्ष **फ़िरोज़ खान** से उनकी पहल के बारे में बात की।*

"हमारे लोक कला और शिल्प क्षेत्रों, अनुदान और सामाजिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए द्वीपवासियों के बीच चल रहे प्रयासों की प्रधानमंत्री द्वारा की गई सराहना से बहुत खुश हैं। हम सम्मानित महसूस कर रहे हैं कि उन्होंने 'मन की बात' कार्यक्रम में हमारे सामुदायिक प्रयासों को शामिल किया।"

स्थानीय कला और संस्कृति के संरक्षक : कर्नाटक के कावेमश्री

देश में स्थानीय कला और संस्कृति को पुनर्जीवित करने के बढ़ते प्रयासों के बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने **डॉ. कावेमश्री श्रीनिवास** के प्रयासों की सराहना की, जिनकी अपनी भूमि की संस्कृति और साहित्यिक कौशल के प्रति जुनून और इस विरासत को संरक्षित करने की आवश्यकता ने 'कला चेतना' को जन्म दिया। पच्चीस साल पहले होटल व्यवसायी डॉ. कावेमश्री ने उस मंच की स्थापना कर्नाटक के गदग में की थी, जहाँ आज कर्नाटक और देश-दुनिया के कलाकारों के कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। दूरदर्शन से अपना अनुभव साझा करते हुए उन्होंने कहा, "मैंने यहाँ एक होटल शुरू किया था, जहाँ से 'कला चेतना' संस्था की शुरुआत हुई। हा. मा. नायक और पूर्व मुख्यमंत्री वीरप्पा मोइली के मार्गदर्शन में मैंने यक्षगान का अध्ययन किया और पीएचडी प्राप्त की और अब मैं गदग में 25 वर्षों से 'कला चेतना' पूरे उत्साह से चला रहा हूँ। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ, जब प्रधानमंत्री मोदी ने 'मन की बात' में मेरी उपलब्धियों का ज़िक्र किया। मुझे बहुत खुशी हुई।"

कावेमश्री ने 'मन की बात' में अपने उल्लेख के बारे में क्या कहा, यह सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मेक इन इंडिया की ताकत, कर्नाटक से यूरोप तक

प्रधानमंत्री के 'लोकल फ़ॉर वोकल' और 'मेक इन इंडिया' के आह्वान को आगे बढ़ाते हुए पारम्परिक कौशल और अपने प्रयासों में सस्टेनेबिलिटी को बढ़ावा देते हुए शिवमोगा, कर्नाटक के एक दम्पत्ति सुपारी फ़ाइबर से अद्वितीय उत्पाद बना रहे हैं। सुरेश और मैथिली न केवल इन उत्पादों को राष्ट्रीय स्तर पर बेच रहे हैं, बल्कि वे यूरोप के अंतरराष्ट्रीय बाज़ारों में भी अपनी जगह बना चुके हैं। सुपारी, जो कर्नाटक सहित कई भारतीय राज्यों में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, का उपयोग पर्यावरण के अनुकूल हाथ से बने उत्पादों जैसे ट्रे, प्लेट, हैंडबैग, चप्पल और सजावटी वस्तुओं को बनाने के लिए किया जा रहा है।

दुनिया एक सस्टेनेबल भविष्य के तरीके तलाश रही है और भारत का पारम्परिक ज्ञान एक सतत जीवन शैली के लिए बहुत सारे तरीके प्रदान करता है। हमारे स्वदेशी और स्थानीय उत्पाद हमारी पहचान को, स्थानीय अर्थव्यवस्था को मज़बूत करते हैं और बड़ी संख्या में लोगों के भविष्य को उज्ज्वल करते हैं।

*हमारी दूरदर्शन टीम ने भूमि एग्री वेंचर्स के सह-संस्थापक **श्री सुरेश एवं श्रीमती मैथिली** से उनके स्टार्टअप के बारे में बात की।*

श्री सुरेश ने बताया, "रविवार को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी ने अपने 'मन की बात' में हमारे स्टार्टअप के बारे में बात की। यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई कि मेरा स्टार्टअप बहुत छोटा होने के बावजूद प्रधानमंत्री ने हमें पहचाना और उन्होंने अपने मासिक सम्बोधन में हमारे उत्पादों और स्टार्टअप के बारे में बात की। यह मेरे लिए सबसे बड़ा इनाम है।" श्रीमती मैथिली ने कहा, "यह एक सम्मान और गर्व का क्षण है। प्रधानमंत्री के उल्लेख के पश्चात् पूरे देश का ध्यान हमारे कार्य और संगठन की ओर आकर्षित हुआ है। इससे वास्तव में और अधिक करने की हमारी ज़िम्मेदारी बढ़ गई है।"

श्रीमती मैथिली ने 'मन की बात' में उल्लेख किए जाने पर आभार व्यक्त किया। सुनने के लिए QR कोड को स्कैन करें।

प्राचीन भारतीय परम्परा को बढ़ावा दे रहा दुबई का कलारी क्लब

कलारिपयट्टु, केरल का एक प्राचीन मार्शल आर्ट है, जिसे दुनिया के सबसे पुराने और सबसे वैज्ञानिक मार्शल आर्ट में से एक माना जाता है। अतीत में कलारी लोगों के जीवन का अभिन्न अंग थे। बिना किसी लैंगिक भेदभाव के लड़के और लड़कियों को बचपन से ही कलारियों में अभ्यास के लिए भेजा जाता था।

प्रधानमंत्री ने हाल ही में अपने 'मन की बात' में एक ऐसी पहल का ज़िक्र किया, जो विदेशों में भारत की इस प्राचीन परम्परा और विरासत को आगे बढ़ा रही है। उन्होंने दुबई स्थित **कलारी क्लब** के बारे में बात की, जिसने हाल ही में संयुक्त अरब अमीरात के राष्ट्रीय दिवस पर एक साथ अधिकतम संख्या में लोगों द्वारा कलारी के प्रदर्शन के लिए गिनीज़ बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में अपना नाम दर्ज कराया है। चार साल की उम्र के बच्चों से लेकर 60 साल की उम्र के लोगों ने इस कार्यक्रम में प्रदर्शन किया।

कलारी क्लब की स्थापना महाचार्य स्वर्गीय वी.के. माधवपणिक्कर द्वारा की गई थी। उन्होंने एक शोधकर्ता और नवप्रवर्तक के रूप में व्यापक रूप से यात्रा की और विभिन्न मार्शल आर्ट्स के बारे में गहन ज्ञान प्राप्त किया। परम्परा में नवीनता लाने की उनकी क्षमता उन्हें अद्वितीय बनाती थी।

दुबई में 12 से अधिक वर्षों से संचालित इस क्लब में आज दस हज़ार से अधिक छात्र हैं। इस क्लब को दुबई एक्सपो 2020 में भी भाग लेने का मौका मिला था।

पारम्परिक बाँस हस्तशिल्प से सशक्त हो रहे आदिवासी

बाँस की हस्तकला मनुष्य को ज्ञात सबसे पुराने शिल्पों में से एक है और यह पूरे भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित है। बाँस भारतीय भूमि के 13.96 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र को कवर करता है, जिसने देश में हज़ारों व्यक्तियों को रोज़गार प्रदान करने के साथ-साथ हस्तकला को बनाए रखा है। बाँस के हस्तशिल्प उत्पादों में अनेक सजावटी वस्तुओं से लेकर फ़र्नीचर और अन्य उपयोगी सामान, जैसे हैंडबैग, ट्रे, टोकरी, बक्से शामिल हैं। देश भर के कुशल कारीगर, विशेषकर आदिवासी क्षेत्रों से, बाँस हस्तकला में शामिल हैं। ऐसा ही एक संगठन है महाराष्ट्र के पालघर में **'सेवा विवेक'** जिसके बारे में प्रधानमंत्री ने अपने 'मन की बात' में ज़िक्र किया। यह संगठन न केवल अद्वितीय बाँस उत्पाद बना रहा है, बल्कि स्थानीय समुदायों को बाँस की खेती और बाँस उत्पादों के निर्माण में प्रशिक्षित करके उन्हें सशक्त भी बना रहा है। प्लास्टिक और इसी तरह के 'एंटी-नेचर' तत्वों के उपयोग से बचने के लिए जो इकोसिस्टम के लिए हानिकारक हैं, सेवा विवेक अपने उत्पादों के माध्यम से सस्टेनेबिलिटी और पर्यावरण के लिए सम्मान की भावना का प्रसार कर रहा है।

सेवा विवेक की टीम ने अपने विचार साझा करते हुए कहा, "हमें खुशी है कि प्रधानमंत्री ने अपने हालिया 'मन की बात' कार्यक्रम में सेवा विवेक और इसकी 'आदिवासी-निर्मित बाँस उत्पाद पहल' का समर्थन और उल्लेख किया है। हमें सभी बाँस सेवकों, जनजातीय कारीगरों और हमारे स्टाफ़ पर बहुत गर्व है, जो सेवा विवेक एनजीओ से निकटता से जुड़े हुए हैं।"

वीर बाल दिवस

अदम्य शौर्य की कहानी

जनवरी 2022 में गुरु गोबिन्द सिंहजी के प्रकाश पर्व के शुभ अवसर पर प्रधानमंत्री ने घोषणा की थी कि इस वर्ष से 26 दिसम्बर को दसवें सिख गुरु के पुत्रों साहिबज़ादा ज़ोरावर सिंहजी और साहिबज़ादा फतेह सिंहजी की शहादत को 'वीर बाल दिवस' के रूप में मनाया जाएगा।

मुग़ल शासक औरंगज़ेब और उसके लोग ज़बरन साहिबज़ादों का धर्म परिवर्तन कराना चाहते थे, परन्तु गुरु गोबिन्द सिंहजी के ये वीर पुत्र किसी धमकी से डरे नहीं। उन्होंने उत्पीड़न के आगे घुटने टेकने से इन्कार कर दिया और धर्म के नेक सिद्धान्तों से विचलित होने की बजाय मृत्यु का वरण किया।

साहिबज़ादा ज़ोरावर सिंहजी (7 वर्ष) और साहिबज़ादा फतेह सिंहजी (5 वर्ष) को 26 दिसम्बर, 1704 को (वर्तमान पंजाब में स्थित) सरहिन्द में दीवारों में ज़िन्दा चुनवा दिया गया था। गुरु गोबिन्द सिंहजी के बड़े साहिबज़ादे, बाबा अजीत सिंह और बाबा जुझार सिंह, भी दमनकारी मुग़ल शासन के ख़िलाफ़ लड़ते हुए शहीद हो गए थे।

अपने पुत्रों की शहादत पर गुरु गोबिन्द सिंहजी ने अपने लोगों की ओर देखा और कहा था, "चार मूये तो क्या हुआ, जीवत कई हज़ार।" अर्थात, 'अगर मेरे चारों बेटे मर गए तो क्या हुआ? मेरे कई हज़ार देशवासी मेरे पुत्र हैं।' राष्ट्र प्रथम (नेशन फ़र्स्ट) की यह परम्परा गुरु गोबिन्द सिंहजी के आदर्शों में निहित थी।

इतनी कम उम्र में साहिबज़ादों की शहादत देश के नौजवानों के लिए एक प्रेरणा है कि अपने हौसले से नौजवान समय की धारा को हमेशा के लिए पलट सकते हैं। साहिबज़ादों, गुरु गोबिन्द सिंहजी और माता गुजरीजी की वीरता और उनके आदर्श भारत को नई ऊँचाइयों पर ले जाने के हमारे संकल्प को बल देते हैं।

"आने वाले दशकों और सदियों तक वीर बाल दिवस हमें भारत की युवा पीढ़ी की क्षमता की याद दिलाता रहेगा, किस तरह से भारत की युवा पीढ़ी ने अतीत में देश को बचाया है और भारत को मानवता के घोर-प्रघोर अन्धकारों से बाहर निकाला है।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

भारत के इतिहास का पुनर्स्थापन

वीर बाल दिवस का स्मरणोत्सव भारत के आधुनिक इतिहास का एक ऐतिहासिक प्रसंग है। पढ़िए सिख समुदाय के प्रतिनिधियों का क्या कहना है।

मनजिंदर सिंह सिरसा
पूर्व अध्यक्ष, दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति

वीर बाल दिवस के उपलक्ष्य में एमएस सिरसा की प्रतिक्रिया सुनने के लिए QR कोड को स्कैन करें

"देश के 75 सालों का अब तक सबसे बड़ा ऐतिहासिक फ़ैसला है। जिस देश की राजधानी में गुरु तेग़ बहादुर साहिब महाराजजी की शहादत हुई हो...(वहाँ) किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी कि ऐसा भी समय आएगा कि देश के प्रधानमंत्री लाल क़िले से गुरु तेग़ बहादुरजी का (400वाँ प्रकाश पर्व) मनाएँगे, पटना साहिब में उनके पिताजी गुरु गोबिन्द सिंहजी का (350वाँ प्रकाश पर्व) मनाएँगे और अब इंडिया गेट के कर्त्तव्य पथ से साहिबज़ादों की वह तस्वीर, जब उनको शहीद किया जा रहा था, उसके साथ जिस तरह से 3,500 बच्चों ने मार्च पास्ट किया, यह ऐतिहासिक है। (बच्चों के साथ) कई अध्यापकों और देश के हज़ारों कॉलेजों और यूनिवर्सिटीज़ ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। आज देश में हज़ारों पेट्रोल पम्प स्टेशनों, रेलवे स्टेशंस और हवाई अड्डों में प्रदर्शनी और पोस्टर लगे हुए हैं। लोगों को पता चल रहा है कि साहिबज़ादे कौन हैं। यह एक असम्भव चीज़ थी जिसको प्रधानमंत्रीजी ने सम्भव करके दिखाया है। यह प्यार है उनका गुरु साहिबानों के प्रति, यह उनकी श्रद्धा और निष्ठा है।"

हरमीत सिंह कालका
अध्यक्ष, दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति

एचएस कालका ने प्रधानमंत्री को धन्यवाद दिया, सुनने के लिए QR कोड को स्कैन करें

"मैं देश और दुनिया भर के सिखों की तरफ़ से तहेदिल से प्रधानमंत्रीजी का धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने वीर बाल दिवस को एक स्मरणोत्सव घोषित किया और समर्पित किया छोटे साहिबज़ादों को, बाबा ज़ोरावर सिंहजी और बाबा फ़तेह सिंहजी को। मैं समझता हूँ कि सिखों के गुरु के इतिहास, गुरु के साहिबज़ादों के इतिहास को घर-घर तक पहुँचाने का जो काम प्रधानमंत्री ने किया है, इससे बड़ी बात और सिखों के लिए हो ही नहीं सकती। कर्त्तव्य पथ पर गणतंत्र दिवस की परेड के अलावा केवल गुरु हरकिशन पब्लिक स्कूल के बच्चों की परेड निकली है और दिल्ली के सिखों को इस बात पर गर्व है की एक हाथ में खालसाई झंडे और एक हाथ में देश का तिरंगा लेकर बच्चे चल रहे थे। इस बात पर हमें गर्व है कि हमारे बुज़ुर्गों ने, हमारे बड़ों ने जो क़ुर्बानियाँ दी हैं देश के लिए, उसको आज देश के प्रधानमंत्री द्वारा मान्यता दी जा रही है और मैं उनका तहेदिल से धन्यवाद करता हूँ। वे जिस सोच को लेके चले हैं, पूरा सिख समाज उनके साथ है।"

इक़बाल सिंह लालपुरा
अध्यक्ष, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग

"सिखों की बहुत बड़ी ख़ुशकिस्मती है कि ऐसे प्रधानमंत्री हमें मिले, जिन्होंने एक नहीं, बल्कि पच्चीस बड़े काम सिखों के लिए किए हैं। (करतारपुर) कॉरिडोर बनना, गोल्डन टेम्पल को FCRA मिलना, 1984 के (सिख दंगों) के पीड़ितों की सहायता — कोई भी ऐसा काम नहीं रहा जो प्रधानमंत्री के ध्यान में रहा हो और उसे न किया गया हो। गुरु तेग़ बहादुर साहिब का गुरपुरब (400वाँ प्रकाश पर्व) लाल किले पर मनाया गया जहाँ से उनको क़त्ल करने का हुक़्म हुआ था। गुरु नानक साहब और गुरु गोबिन्द सिंह साहब का पर्व मनाया गया। इसी कड़ी में वीर बाल दिवस है। उनकी कुर्बानी को याद करके यह वीर बाल दिवस मनाया गया। 2018 से अकाली दल और दिल्ली गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति की माँग थी कि साहिबज़ादों की शहादत पर बाल दिवस मनाया जाए, पर प्रधानमंत्रीजी ने कहा कि वे सिर्फ बाल ही नहीं, बल्कि वीर भी थे। इसलिए इसमें 'वीर' शब्द जोड़ दिया गया और पूरे देश और दुनिया में इन साहिबज़ादों की शहादत की जो दास्ताँ है, उसे घर-घर तक पहुँचाया गया है। इसके लिए प्रधानमंत्रीजी को बहुत-बहुत धन्यवाद।"

आईएस लालपुरा ने सिख समुदाय की ओर से प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त किया, सुनने के लिए QR कोड को स्कैन करें

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

kalariclubdubai

608 views

kalariclubdubai കളരിപ്പയറ്റിലെ ആദ്യ ഗിന്നസ് വേൾഡ് റെക്കോർഡിന് ഇന്ത്യൻ പ്രധാനമന്ത്രിയുടെ ആശംസ 🙏

#pmoindia #narendramodi #narendra_modi #kalari #kalaridubai #kalaripayattu #dubaikalari #india #indian #dubai #primeminister #indianprimeminister #mankibaat #kerala #dubai Narendra Modi

---

Himanta Biswa Sarma
@himantabiswa

'Swachh Bharat Mission' has become firmly rooted in the mind of every Indian today - Hon PM Shri @narendramodi Ji in #MannKiBaat today.

@PMOIndia

11:46 AM · Dec 25, 2022

Dr. Pramod Sawant
25 December at 14:57

Tuned in to the 96th Episode of #MannKiBaat of Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modi Ji with BJP Goa Karyakartas.

PM praised the scale and scope of organization of the 9th World Ayurveda Congress & Arogya Expo 2022 and highlighted the participation of delegates from 40 countries and 215 companies from across the world displaying their products with more than 1 lakh people enjoying their experience with Ayurveda."

With the Institutes like All India Institute of Ayurveda, consistent support of AYUSH Ministry and rising awareness about Indic medicine system the Ayurveda shall serve Indians as well as at Global level.

Seva Vivek - NGO
Dec 30, 2022

मन की बात इस कार्यक्रम के दौरान, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी ने "बांस से बने विभिन्न वस्तुओं" की और ये कार्य करनेवाले पालघर जिले की "सेवा विवेक NGO" की सराहना की।

सेवा विवेक की इस कार्य से पालघर जिल की आदिवासी महिलाओं को रोजगार के साथ सम्मान भी मिल रहा है।

इस कार्यक्रम के बाद ऑफिशियल ट्विटर हैंडल पर भी सेवा विवेक NGO की विशेष रूप से सराहना की।

सेवा विवेक NGO के बारे मे अधिक जानकारी के लिए और बांस की वस्तुएं खरीद ने के लिए भेंट दें: www.sevavivek.com

---

Smriti Z Irani
@smritiirani

PM @narendramodi जी के नेतृत्व में भारतीय योग शिक्षा को वैश्विक पटल पर नई पहचान मिली है।

आज #MannKiBaat में, स्तन कैंसर के इलाज़ हेतु 'टाटा मेमोरियल सेंटर' द्वारा किए गए रिसर्च की चर्चा, प्रमाण है कि योग विद्या कैंसर जैसी बीमारियों से भी लड़ने में लाभकारी है।

Translate Tweet

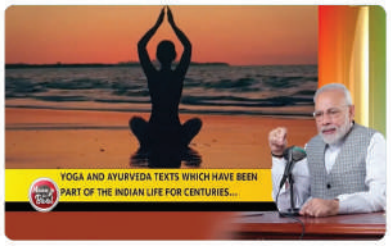

4:45 PM · Dec 25, 2022

Meenakashi Lekhi
@M_Lekhi

In the 96th and final episode of #MannKiBaat 2022, Hon'ble PM @narendramodi Ji highlighted the achievements of this past year.

Indeed, 2022 has been an incredible year for India.

Dr.L.Murugan
@Murugan_MoS

கடந்த 2014 -இல் துவங்கிய #SwachhBharat இயக்கம் நம் தேச மக்களின் தனித்துவமாக முயற்சியினால் மாபெரும் உச்சத்தை அடைந்து இன்று ஒவ்வொரு இந்தியரின் மனதிலும் உறுதியாக வேரூன்றியிருப்பதில் நான் மகிழ்ச்சி அடைகிறேன்.

-பாரத பிரதமர் திரு.@narendramodi ஜி

Translate Tweet

PMO India and 7 others

4:49 PM · Dec 25, 2022 · 1,748 Views

Ashwini Vaishnaw
@AshwiniVaishnaw

PM @narendramodi Ji's 'Namami Gange' mission gets world recognition.

#MannKiBaat

Indian Diplomacy
@IndianDiplomacy

India government organization

In #MannKiBaat today, PM @narendramodi mentioned about Kalaripayattu, the ancient Martial Art of India, lauded as the pride of Kerala.

A Guinness World Record has been made in Dubai for most people simultaneously performing the Kalaripayattu together.

PMO India @PMOIndia · Dec 25

India government organization

A news from Dubai which makes every Indian proud. #MannKiBaat

हाल ही में दुबई से खबर आई कि वहाँ के कलारी club ने Guinness Book of World Records में नाम दर्ज किया है। कोई भी सोच सकता है कि दुबई के club ने Record बनाया तो इसमें भारत से क्या संबंध? दरअसल, **ये record, भारत की प्राचीन मार्शल आर्ट कलारीपयट्टु से जुड़ा है।** ये record एक साथ सबसे अधिक लोगों के द्वारा कलारी के प्रदर्शन का है।

मन की बात

Dr Jitendra Singh
@DrJitendraSingh

"पिछले दिनों सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने भी मुंबई में, अहमदाबाद में, कोलकाता में, शिलांग में,कई शहरों में अपने दफ्तरों में भरपूर प्रयास किया और उसके कारण आज उनको दो-दो, तीन-तीन मंजिलें, पूरी तरह से नये सिरे से काम में आ सके,ऐसी उपलब्ध हो गई।"- पीएम श्री @narendramodi

#MannKiBaat

Translate Tweet

11:28 AM · Dec 25, 2022

Dr Mansukh Mandaviya
@mansukhmandviya

लोहारों का आनंद लीजिए लेकिन थोड़ा सतर्क भी रहिए। आप भी देख रहे हैं, दुनिया के कई देशों में कोरोना बढ़ रहा है इसलिए हमें मास्क और हाथ धोने जैसी सावधानियों का और ज़्यादा ध्यान रखना है।

हम सावधान रहेंगे तो सुरक्षित भी रहेंगे : PM @NarendraModi जी

#MannKiBaat

Translate Tweet

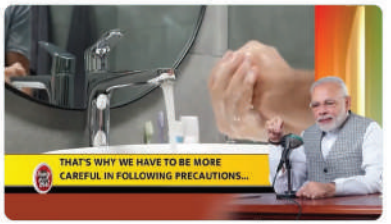

12:42 PM · Dec 25, 2022

Bhupender Yadav
@byadavbjp

Ever since the country changed the laws related to bamboo, a huge market has developed for it.

PM Shri @narendramodi ji shares an example from Maharashtra.

#MannKiBaat

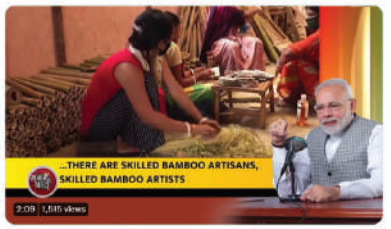

3:08 PM · Dec 25, 2022

Shobha Karandlaje @ShobhaBJP · Dec 25
Replying to @ShobhaBJP
Hear PM Sri @narendramodi Ji extol Sange Sherpa Ji of Sikkim for his efforts to clean Tsomgo Lake in the face of adversity.

He has received recognition for his selflessness to conserve the environment.

This dynamism makes Sikkim one of the cleanest states in India.
#MannKiBaat

PMO India and 4 others

Biplab Kumar Deb @BjpBiplab

When the power of our resolve is strong, even the biggest challenge becomes easy. The example of this has been set by Sange Sherpa ji of Thegu village of Sikkim: PM Shri @narendramodi Ji

#MannKiBaat

11:43 AM · Dec 25, 2022

Basavaraj S Bommai @BSBommai

Proud moment for Karnataka as Dr. Kavemshri from Gadag gets appreciated by Hon'ble PM @NarendraModi Ji in #MannKiBaat for reviving local art & culture. His platform 'Kala Chetna' showcases the talent of local artists & connects them with a vast audience.
Well done Dr. Kavemshri.

1:08 PM · Dec 25, 2022

Yogi Adityanath @myogiadityanath

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने @mannkibaat में आज 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के ध्येय को विस्तार देते 'काशी-तमिल संगमम्' का उल्लेख किया।

संगमम् ने तमिलनाडु एवं काशी की सनातन आध्यात्मिक व सांस्कृतिक विरासतों को एक सूत्र में पिरोया है।

आपका आभार प्रधानमंत्री जी!

Translate Tweet

Nitin Gadkari @nitin_gadkari

सर्वप्रथम हम सभी के प्रेरणास्रोत श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के जन्म जयंती दिवस के अवसर पर उन्हें श्रद्धेय अटलजी को आदरांजली अर्पण की।

#MannKiBaat

Keshav Prasad Maurya @kpmaurya1

2022, कई मायने में बहुत ही प्रेरक और अद्भुत रहा।

इस वर्ष भारत ने अपनी आजादी के 75 वर्ष पूरे किए और अमृतकाल का प्रारंभ हुआ।

इस साल देश ने नई रफ्तार पकड़ी और सभी देशवासियों ने एक से बढ़कर एक काम किए।

- मा. पीएम श्री @narendramodi जी

#MannKiBaat
Translate Tweet

11:29 AM · Dec 25, 2022

Narendra Singh Tomar @nstomar

2022, कई मायने में बहुत ही प्रेरक और अद्भुत रहा।

इस वर्ष भारत ने अपनी आजादी के 75 वर्ष पूरे किए और अमृतकाल का प्रारंभ हुआ।

इस साल देश ने नई रफ्तार पकड़ी और सभी देशवासियों ने एक से बढ़कर एक काम किए।

#MannKiBaat
Translate Tweet

2022 में हर क्षेत्र में भारत का रहा दमखम, साल की आखिरी 'मन की बात' में बोले पीएम मोदी

India becomes world's 5th largest economy: PM

Modi lists country's achievements in 2022 including 220 crore COVID-19 vax shots

The country crossed the magical exports figure of $400 billion this year

ಕನ್ನಡಿಗರ ಸಾಧನೆಗೆ ಮನ್ ಕೀ ಬಾತ್‌ನಲ್ಲಿ ಮೆಚ್ಚುಗೆ ರಾಜ್ಯದ ಅಡಕೆ ಉತ್ಪನ್ನಕ್ಕೆ ಶ್ಲಾಘನೆ

ಗದಗಿನ ಕಾವೆಂಶ್ರೀಯನ್ನು ಪ್ರಶಂಸಿಸಿದ ಪ್ರಧಾನಿ ಮೋದಿ

કોરોના સામે સતર્ક રહો : ભારતને ટી.બી. મુક્ત કરાશે : મોદી

આજે ભારત દુનિયાની પાંચમી સૌથી મોટી અર્થવ્યવસ્થા બન્યું તે આપણાં માટે ગર્વની બાબત
પહેલાની જેમ દરેકે ફરજિયાત માસ્ક પહેરવું જોઇએ : મન કી બાતમાં મોદીની સલાહ

मन की बात

पीएम ने साझा किए विचार, बोले- इस वर्ष दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना भारत

2022 की सफलताओं ने विश्व में बढ़ाया भारत का मान : मोदी

एक भारत, श्रेष्ठ भारत की भावना का विस्तार

जी-20 के उत्साह को नई ऊंचाई पर ले जाना - पीएम ने कहा कि इस साल भारत को जी-20 समूह की अध्यक्षता की जिम्मेदारी भी मिली है। पिछली बार इस पर विस्तार से चर्चा की थी। साल 2023 में हमें जी-20 के उत्साह को नई ऊंचाई पर लेकर जाना है, इस आयोजन को एक जन-आंदोलन बनाना है।

96TH EPISODE: MODI ROUNDS OFF LAST 'MANN KI BAAT' OF THE YEAR

'2022 HAS BEEN VERY INSPIRING'

Enjoy the festive season but be vigilant, stresses PM Modi as Covid is spreading again in some countries

Prime Minister Narendra Modi

MODI SAYS

- Various successes of India in 2022 have created a special place all over the world
- Atal Bihari Ji was a great statesman who gave exceptional leadership to the country
- It is our collective responsibility to keep Ganga river clean
- Our nation will soon completely eradicate the Kala Azar
- UN has included 'Namami Gange' mission in world's top 10 initiatives aimed at reviving the (natural) ecosystem
- 'Swachh Bharat Mission' has become firmly rooted in mind of every Indian today
- Corona is increasing in many countries

प्रधानमंत्री मोदी ने जी-20 के आयोजन को जनआंदोलन बनाने का आह्वान किया

भारत की अर्थव्यवस्था के लिए उपलब्धियों भरा रहा वर्ष 2022

मन की बात

"स्थानीय कला, शिल्प से मजबूत होगी देश की पहचान"

पारंपरिक चिकित्सा के लिए एम्स में भी प्रयास

नमामि गंगे से नदी में सुधर रही जैवविविधता

''मन की बात'': दुनियाभर में कोविड के बढ़ते मामलों पर पीएम मोदी की सलाह

सतर्क, सुरक्षित और सावधान रहें, नमामि गंगे पहल की दुनिया कर रही सराहना

gujaratvaibhav.com

ಶಿವಮೊಗ್ಗದ ಉದ್ಯಮಿ ದಂಪತಿಗೆ ಶ್ಲಾಘನೆ

FRIENDS, A COUPLE FROM KARNATAKA IS DELIVERING MANY UNIQUE PRODUCTS...

The entrepreneur couple featured on PM Narendra Modi's radio show

Mann Ki Baat mentions palm leather startup

EXPRESS NEWS SERVICE @Shivamogga

A Shivamogga-based couple's out-of-the-box idea on the use of betelnut fiber has earned the praise of Prime Minister Narendra Modi. Suresh and his wife Maithili, who are residents of Vinoba Nagar, are exporting their palm leather products internationally.

Modi praised the couple in his Mann Ki Baat episode on Sunday and said the countrymen should use such indigenous products and gift them to others as well.

Suresh and Maithili, through their startup Bhoomi Agri Ventures, are making and exporting areca palm products. Their palm leather project was instigated as a cheap plant-based replacement for animal leather, plastic and rubber.

The PM said the couple is sending many unique products made from betelnut fiber to the international market. "These people are making decorative things ranging from trays, plates and handbags from betelnut fiber. Chappals made of this fiber are also being liked a lot today. Today, their products are being sold in London and other markets in Europe. This is the very quality of our natural resources and traditional skills, which is being liked by everyone. With the traditional knowledge of India, the world is looking at ways of a sustainable future. We ourselves also need to be more and more aware of this. We should use such indigenous and local products and gift them to others as well. This will also strengthen our identity, the local economy, and, in large numbers, brighten the future of the people," he said.

Expressing happiness over Modi mentioning them in this radio programme, Suresh told *TNIE* that their project was possible thanks to the Rashtriya Krishi Vikas Yojana - Remunerative Approaches for Agriculture and Allied sector Rejuvenation (RKVY-RAFTAAR).

२०२२ मध्ये भारताची अर्थव्यवस्था ५ व्या क्रमांकावर

पंतप्रधान नरेंद्र मोदींनी घेतला वर्षभरातील कामगिरीचा आढावा

2022 की आखिरी मन की बातः मोदी ने वाजपेयी को याद किया, बोले- मास्क और सैनिटाइजेशन का ज्यादा ध्यान रखें

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को साल के अंतिम मन की बात कार्यक्रम में साल भर की उपलब्धियों को बताया। उन्होंने कहा कि देश ने अपनी आजादी के 75 साल पूरे किए। 2022 ने नई रफ्तार पकड़ी, सभी देशवासियों ने एक से बढ़कर एक काम किया। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती पर श्रद्धांजलि दी। देशवासियों को क्रिसमस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आज जीसस क्राइस्ट की शिक्षाओं को याद करने का दिन है। चीन में कोरोना से हर दिन हजारों मौतें हो रही है। पीएम मोदी ने लोगों से महामारी से बचने के लिए सावधानी बरतने की अपील की है। उन्होंने कहा कि हम सभी को मास्क और सैनिटाइजेशन का ज्यादा ध्यान रखना है। हम सावधान रहेंगे, तो सुरक्षित भी रहेंगे। पीएम मोदी ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को याद किया। उन्होंने कहा कि वे एक महान राजनेता थे, जिन्होंने देश को असाधारण नेतृत्व दिया।

हर भारतवासी के हृदय में उनके लिए एक खास स्थान है। पीएम ने एक किस्सा सुनाते हुए कहा कि मुझे कोलकाता से आस्था नाम की लड़की का एक लेटर मिला। इसमें उन्होंने हाल की अपनी दिल्ली यात्रा का जिक्र किया है। वे लिखती हैं कि इस दौरान उन्होंने पीएम म्यूजियम देखने के लिए समय निकाला। इस म्यूजियम में उन्हें अटल जी की गैलरी खूब पसंद आई। पीएम मोदी ने कहा कि हमने भारत से स्मॉलपॉक्स, पोलियो जैसी बीमारियों को खत्म करके दिखाया है।

हर क्षेत्र में श्रेष्ठ बनेगा भारत

पीएम मोदी का 'मन की बात' कार्यक्रम में इस वर्ष का अंतिम संबोधन

कोरोना बढ़ रहा है सतर्क रहें

हर चुनौती का सामना करने में सक्षम है देश

2022नी छेल्ली मन की बात

2022 ખરેખર ખૂબ જ પ્રેરણાદાયક રહ્યું : મોદી

વર્ષ 2022 માં દેશની જનતાની તાકાત તેમની સફળતાની હદ એટલી બધી હતી કે 'મન કી બાત'માં દરેકને સામેલ કરવું મુશ્કેલ હશે

सरते वर्ष प्रेरणादायी, नवे वर्ष गतीशील!

पंतप्रधानांची २०२२ मधील अखेरची 'मन की बात' : देशवासियांना कोरोनापासून सावध राहण्याचा सल्ला

Shivamogga start-up features in Mann Ki Baat

EXPRESS NEWS SERVICE
@Shivamogga

A Shivamogga-based couple's out-of-the-box idea on the use of betelnut fiber has earned the praise of Prime Minister Narendra Modi. Suresh and his wife Maithili, who are residents of Vinoba Nagar in the city, are exporting their palm leather products internationally.

Modi praised the couple in his Mann Ki Baat episode on Sunday and said that the countrymen should use such indigenous and local products and gift them to others as well.

Suresh and Maithili, through their start-up Bhoomi Agri Ventures, are making and exporting areca palm products. Their palm leather project was instigated as a cheap plant-based replacement for animal leather, plastic and rubber.

The PM said the couple is sending many unique products made from betelnut fiber to the international market.

The PM said, "These people are making decorative things ranging from trays, plates and handbags from betelnut fiber. Chappals made of this fiber are also being liked a lot today. Today, their products are being sold in London and other markets in Europe. This is the very quality of our natural resources and traditional skills, which is being liked by everyone. With the traditional knowledge of India, the world is looking at ways of a sustainable future. We ourselves also need to be more and more aware of this. We should use such indigenous and local products and gift them to others as well. This will also strengthen our identity, the local economy, and, in large numbers, brighten the future of the people," the PM said.

In 2022, India displayed its might in every field, carved special place: PM

TRIBUNE NEWS SERVICE

NEW DELHI, DECEMBER 25

Prime Minister Narendra Modi on Sunday hailed 2022 as a year when India displayed its might in every field and carved a special place for itself in the world and urged citizens to follow "vocal for local" as the way forward towards self-reliance.

Addressing the 96th episode of "Mann ki Baat", the PM said India achieved great heights during 2022 and surpassed magical records. "Various successes of 2022 have created a special place for India the world over. 2022 means India attaining the status of the world's fifth-largest economy; 2022 means India surpassing the incredible figure of 220 crore Covid vaccines; 2022 means India crossing the magical export figure of $400 billion; 2022 means citizens adopting the pledge of self-reliance and living it; 2022 means welcoming India's first indigenous aircraft carrier INS Vikrant; 2022 means India's glory in the space, drone and defence sectors; 2022 means India's might in every field," the PM said.

The PM also used the occasion to salute the sacrifices of the Sahibzadas ahead of Veer Bal Diwas on Monday and said, "The country cannot forget the sacrifices of Sahibzadas Zorawar Singh ji and Fateh Singh ji and Mata

CONTINUED ON PAGE 9

SALUTES SAHIBZADAS

The PM saluted the sacrifices of the Sahibzadas ahead of Veer Bal Diwas on Monday and said, "The country cannot forget the sacrifices of Sahibzadas Zorawar Singh ji and Fateh Singh ji and Mata Gujri."

Modi: Matter of pride UN included 'Namami Gange' in world's top 10 initiatives

ଚଳିତ ବର୍ଷର ଶେଷ ମନ୍ କୀ ବାତ୍

ପ୍ରେରଣାଦାୟୀ ବର୍ଷ ଥିଲା ୨୦୨୨

कालाजार और टीबी से मुक्त होने की दिशा में बढ़ रहा भारत : प्रधानमंत्री

'Namami Gange' helped improve biodiversity: PM

New Delhi: Prime Minister Narendra Modi in 'Mann Ki Baat' on Sunday highlighted the global appreciation for the country's flagship programme for Ganga rejuvenation which was recently recognised by the UN as one of the 10 ground-breaking effort from around the world helping in restoring the natural ecosystem.

He said it is proof of the country's "willpower and tireless efforts" and it also shows a new path to the world. "It is a matter of pride for all of us that, today, this initiative of India is getting appreciation from all over the world. The United Nations has included the 'Namami Gange' mission in the world's top ten initiatives to restore the ecosystem," said Modi. The PM gave credit to the people's participation in this programme, calling them the biggest source of energy behind the campaign. TNN

साल की अंतिम मन की बात : स्थानीय कला, संस्कृति, शिल्प से मजबूत होगी देश की पहचान एवं अर्थव्यवस्था

2022 बड़ी सफलताओं का वर्ष, भारत ने दुनिया में बनाया विशेष स्थान

'Covid cases up in many nations, be vigilant': Modi in year's last radio talk

HT Correspondent
letters@hindustantimes.com

NEW DELHI: With uncertainty looming over how the Covid-19 situation could unfold in India amid a surge in cases in some countries, Prime Minister Narendra Modi on Sunday asked people to stay vigilant and take precautions against the virus.

In his monthly Mann ki Baat radio address, Modi said people going on vacation during Christmas and the New Year must follow protocols such as wearing masks and sanitising hands. His comments came days after he chaired a high-level meeting to review the government's preparedness to deal with Covid-19.

States should make sure they are prepared with adequate medical resources, officials must ramp up testing and genome sequencing, people should wear masks and take precautions ahead of the festival season, and the booster doses gap must be bridged, the Prime Minister said at the meeting on Thursday.

The meeting came amid a spike in some parts of the world, particularly China, where large parts of the population does not have a previous exposure or adequate protection through vaccination, though experts have pointed out that there is no cause for alarm in India, where the population has significantly higher baseline immunity.

ಕನ್ನಡಿಗರ ಸಾಧನೆ ಕೊಂಡಾಡಿದ ಪ್ರಧಾನಿ ಮೋದಿ

ਸਾਲ 2022 ਦੀਆਂ ਸਫ਼ਲਤਾਵਾਂ ਨੇ ਅੱਜ ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆਂ 'ਚ ਭਾਰਤ ਲਈ ਖ਼ਾਸ ਥਾਂ ਬਣਾਈ: ਮੋਦੀ

ਕੋਰੋਨਾ ਦੇ ਦੂਜੇ ਦੇਸ਼ਾਂ 'ਚ ਮੁੜ ਸਰਗਰਮ ਹੋਣ 'ਤੇ ਦੇਸ਼ ਵਾਸੀਆਂ ਨੂੰ ਕੀਤਾ ਸੁਚੇਤ

UN applause for 'Namami Gange' proof of India's willpower: PM

New Delhi: Prime Minister Narendra Modi in 'Mann Ki Baat' on Sunday highlighted the global appreciation for the country's flagship programme for Ganga rejuvenation which was recently recognised by the UN as one of the 10 ground-breaking effort from around the world helping in restoring the natural ecosystem.

He said it is proof of the country's "willpower and tireless efforts" and it also shows a new path to the world.

"It is a matter of pride for all of us that, today, this initiative of India is getting appreciation from all over the world. The United Nations has included the 'Namami Gange' mission in the world's top ten initiatives to restore the ecosystem," said Modi.

The PM gave credit to the people's participation in this programme, calling them the biggest source of energy behind the campaign. "Also, Ganga Praharis and Ganga Doots have a big role to play. They are engaged in spreading awareness through planting trees, cleaning ghats, Ganga Aarti and street plays," he said. TNN

पंतप्रधानांकडून मुंबईतील टाटा हॉस्पिटलचे कौतुक

पालघरच्या यांबूच्या कलाकुसरीचाही उल्लेख

अमृतमहोत्सव, वाजपेयी आणि कोरोनाचे सावट

पंतप्रधान मोदींनी 'मन की बात'मध्ये साधला संवाद

India switched to self-reliant mode in 2022: PM Modi

RAJESH KUMAR THAKUR
@ New Delhi

THE outgoing year 2022 has been inspirational and wonderful for India, Prime Minister Narendra Modi said on Sunday in his last 'Mann Ki Baat' episode of the year.

Expressing gratitude to the people, PM Modi said that it was the strength of the people of the country, their cooperation, their determination and success that made the outgoing 2022 an inspiring year.

The PM also made an appeal to the people to be more cautious as the Covid-19 has again started spreading in many countries.

Lauding the country's performances in 2022, the PM said: "In 2022, India completed 75 years of Independence and started observing the 'Amrit Kaal'. This year the country gained a new momentum."

He also said it attained the status of the world's fifth largest economy, achieved the record surpassing "incredible" figure of 220 crore Covid vaccine doses and crossed the "magical" export figure of $400 billion.

The country adopted and lived its resolution of 'self-reliant India' and welcomed its first indigenous aircraft carrier INS Vikrant and also attained glory in space, drone and defence sectors in the year, he added. Extending the spirit of "Ek Bharat-Shreshtha Bharat" (one India, great India), many events were organised, he said, citing the Madhavpur Mela in Gujarat and the Kashi-Tamil Sangamam in Varanasi.

In 2022, the strength of people of the country, their cooperation, their resolve, their vast success was of such magnitude that it would be difficult to include all of these in 'Mann Ki Baat'. 2022 has indeed been very inspiring and wonderful in many ways

Narendra Modi, Prime Minister

Speaking about assuming the Presidency of G20, the PM said: "In 2023, we have to take the enthusiasm of G-20 to new heights, making this event a mass movement".

Modi greeted people on Christmas and for the upcoming New Year and also paid tributes to former prime minister Atal Bihari Vajpayee.

"I am happy that in the era of evidence-based medicine, yoga and ayurveda are now standing up to the touchstone of tests of the modern era," he said.

भारतीय चिकित्सा पद्धतियों की स्वीकार्यता के लिए एम्स की पहल का जिक्र

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि जैसे-जैसे अधिक से अधिक भारतीय चिकित्सा पद्धतियां साक्ष्य-आधारित होती जायेंगी, वैसे-वैसे इसकी स्वीकार्यता पूरे विश्व मे बढ़ेगी। इसी क्रम में उन्होंने दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की एक पहल का उल्लेख किया। प्रधानमंत्री ने कहा, 'हमारी पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियों को प्रमाणित करने लिए छह साल पहले सेंटर फॉर इंटीग्रेटिव मेडिसिन एंड रिसर्च की स्थापना की गयी। इसमें आधुनिक तकनीक और नवीनतम शोध तरीकों का उपयोग किया जाता है। यह केन्द्र पहले ही प्रतिष्ठित ● शेष पृष्ठ 11 पर

THE TIMES OF INDIA

India has become 5th largest economy in 2022: PM Modi in last Mann ki Baat of year

Mann ki Baat | Enjoy festivals, but with COVID precautions: Prime Minister Narendra Modi

PM Modi mentions Karnataka palm leather startup in 'Mann Ki Baat'

Mann Ki Baat: PM Modi talks about eradicating 'Kala-Azar'; What is it & What are its symptoms?

'Mann Ki Baat': Art, literature, culture are collective wealth of society, says PM Modi

मन की बात: PM ने सिक्किम के संगे शेरपा का किया जिक्र, कहा- इन्होंने अथक प्रयास से बदल दिया ग्लेशियर लेक का रंग

PM Modi Mann Ki Baat: मन की बात में पीएम मोदी ने सभी को दी स्वदेशी प्रोडक्ट इस्तेमाल करने की सलाह

मन की बात में पीएम मोदी ने कहा- कई देशों में बढ़ रहा कोरोना, रखें खास ख्याल

पीएम ने कहा कि 2022 कई मायनों में प्रेरक और अद्भुत रहा. इस साल भारत ने आजादी के 75 साल पूरे किए और इसी साल अमृत काल का प्रारंभ हुआ.

प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' में किया पीएम म्यूजियम का जिक्र, 5 पॉइंट्स में जानिए इसकी खास बातें

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार